राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

# दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 12 अकं :206 रांची (झारखंड) गुरुवार,08 मई 2025 पेज - 08 मूल्यः 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

## 'ऑपरेशन सिंदूर'

# भारत की एयर स्ट्राइक में मारे गए 70 से अधिक आतंकी

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के जवाब में भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकियों के नौ ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की, जिसमें 70 से अधिक आतंकवादी मारे गए। ये हमले नौ लक्षित स्थानों- मुजफ्फराबाद, कोटली, बहावलपुर, रावलकोट, चकस्वरी, भीमबर, नीलम घाटी, झेलम और चकवाल में किए गए। इन हमलों में 60 से अधिक आतंकवादी घायल हो गए। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बारे में सरकार ने बुधवार सुबह मीडिया ब्रीफिंग में बताया कि ये कार्रवाई नपी-तुली और गैर-उत्तेजित प्रकृति की, आनुपातिक और जिम्मेदाराना थी, जो पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद और भारत पर हमलों के निरंतर समर्थन के खिलाफ थी। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि लक्ष्यों का चयन विश्वसनीय खुफिया जानकारी के आधार पर किया गया और इसका उद्देश्य आतंकी ढांचे को ध्वस्त करना और आतंकियों को बेदम करना था। उन्होंने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' सीमा पार आतंकवाद का जवाब देने और उसे रोकने के देश के अधिकार का प्रतिनिधित्व करता है। मिस्री के अलावा प्रेस कॉन्फ्रेंस को भारतीय सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी और वायुसेना की विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने भी संबोधित किया। उन्होंने पाकिस्तान स्थित आतंकी समूहों और उनके भारत पर हमलों से लक्षित ठिकानों के संबंधों पर प्रकाश डाला। नौ आतंकी ठिकानों पर सटीक मिसाइल हमलों के जरिए भारत ने दिखाया कि वह अब सीमा पार आतंकवाद या इसे बढ़ावा देने वाली सरकारी संस्थाओं की मिलीभगत को बर्दाश्त नहीं करेगा। भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना ने ऐतिहासिक अभियान में रात को पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी ढांचे पर हमले किए।

### विश्व आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति पर काम करे : विदेश मंत्री

विदेशमंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर ने पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले कश्मीर पर भारत के हमलों के संदर्भ में कहा है कि दुनिया को आतंकवाद पूरी तरह अस्वीकार करने की नीति पर काम करना चाहिए। अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट से एक लाइन में विदेश मंत्री ने कहा, 'दुनिया को आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति दिखानी चाहिए।'

# 'देश के लिए गर्व का पल'

## ऑपरेशन सिंदूर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पहला रिएक्शन

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** भारतीय सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार प्रतिक्रिया दी है। पीएम मोदी ने इसे 'देश के लिए गर्व का पल' बताया और भारतीय सेना के साहस व संवेदनशीलता की सराहना की। उन्होंने कहा कि सेना ने जिस जज्बे और मानवीय मूल्यों के साथ यह अभियान चलाया, वह अभूतपूर्व है। प्रधानमंत्री ने कहा - 'ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने न सिर्फ अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि यह भी दिखा दिया कि हम हर संकट में एकजुट हैं। हमारी सेना ने जिस दक्षता और करुणा से इस मिशन को अंजाम दिया है, वह हर भारतीय के लिए गर्व की बात है। मैं सभी जवानों को सलाम करता हूं।'

# पहलगाम आतंकवादी हमले की जांच में पाकिस्तान के शामिल होने के साक्ष्य मिले

## खुफिया एजेंसियों के डोजियर पर किया गया तबाह किए गए आतंकी ठिकानों का चयन

**एजेंसी**

**नई दिल्ली ।** पहलगाम हमले के जवाब में बुधवार तड़के भारतीय सशस्त्र सेनाओं का 'ऑपरेशन सिंदूर' विश्वसनीय सूचनाओं पर आधारित रहा। एयर स्ट्राइक के जरिये पाकिस्तान और पीओके में स्थित नौ आतंकी ठिकानों को पूरी तरह तबाह कर दिया गया। भारत की प्राथमिक विदेशी खुफिया एजेंसी रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के तैयार किए गए डोजियर के आधार पर बर्बाद किए गए आतंकी शिविरों का चयन किया गया। यहीं से आतंकियों को प्रशिक्षण देकर भारत में हमले करने के लिए भेजा जा रहा था।नेशनल मीडिया सेंटर में ऑपरेशन सिंदूर के बारे में भारतीय सेना और वायुसेना की ओर से विस्तृत जानकारी दी गई। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की शुरुआत में कहा कि 22 अप्रैल को लश्कर और पाकिस्तान से जुड़े आतंकवादियों ने कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हमला किया और 25 भारतीय नागरिकों और 1 नेपाली नागरिक की हत्या कर दी। आतंकियों ने पर्यटकों को उनके परिवार के सदस्यों के सामने सिर में गोली मारी। उन्होंने कहा कि पहलगाम हमले की जिम्मेदारी रेजिस्टेंस फ्रंट नामक आतंकी समूह ने ली। यह समूह लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा है। इस हमले में पाकिस्तान के तार जुड़े होने की पुष्टि हुई है। उन्होंने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले ने पाकिस्तान के आतंकियों से संबंधों को उजागर कर दिया है। विदेश सचिव विक्रम मिस्री का कहना है कि आतंकियों ने सैलानियों और उनके परिवार को धमकाया गया और उस बर्बरता का संदेश देने को कहा गया। चूंकि जम्मू-कश्मीर में पर्यटन फिर से फल-फूल रहा था, इसलिए हमले का मुख्य उद्देश्य उसे नुकसान पहुंचाना था। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि खुद को प्रतिरोधी मोर्चा कहने वाले एक समूह ने हमले की जिम्मेदारी ली है। यह समूह संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित पाकिस्तानी आतंकवादी समूह लश्कर-ए-तैयबा का मोर्चा है। पहलगाम आतंकवादी हमले की जांच में पाकिस्तान में और पाकिस्तान को भेजे गए आतंकवादियों के संचार नोट सामने आए हैं।? विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने बताया कि पाकिस्तान जानबूझकर दुनिया और अंतरराष्ट्रीय मंचों, जैसे कि वित्तीय कार्रवाई कार्य बल को गुमराह करने के लिए जाना जाता है। आतंकवादी साजिद मीर मामला को मृत घोषित कर दिया गया था और फिर अंतरराष्ट्रीय दबाव के जवाब में उसे वापस जीवित किया गया, जिंदा पाया गया और गिरफ्तार किया गया, इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण है। पहलगाम में हुए हालिया हमले ने जम्मू-कश्मीर और भारत के अन्य हिस्सों में गहरी नाराजगी पैदा की है। हमलों के बाद भारत सरकार ने स्वाभाविक रूप से पाकिस्तान के साथ हमारी बातचीत से संबंधित प्रारंभिक उपायों के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की। ऑपरेशन सिंदूर की प्रेस ब्रीफिंग के लिए दो महिला अधिकारियों को तैनात किया गया। सेना की ओर से कर्नल सोफिया कुरैशी और वायुसेना की ओर से विंग कमांडर व्योमिका ने पहलगाम हमले के बाद भारत की जवाबी कार्रवाई की पूरी जानकारी दी। विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों और उनके परिवारों को न्याय दिलाने के लिए भारतीय सशस्त्र बलों ने मंगलवार-बुधवार रात 1:05 बजे से 1:30 बजे तक ऑपरेशन सिंदूर चलाया, जिसमें नौ आतंकवादी शिविरों को निशाना बनाकर उन्हें सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया गया। स्थानों का चयन नागरिक बुनियादी ढांचे को नुकसान से बचाने और किसी भी नागरिक की जान को नुकसान से बचाने के लिए किया गया। कर्नल सोफिया कुरैशी ने मुंद्रिके, पाकिस्तान तथा पीओजेके में स्थित अन्य आतंकवादी शिविरों पर किए गए कई हमलों के वीडियो प्रस्तुत किए, जिनमें सियालकोट का महमूना जोया कैंप भी शामिल है, जो पाकिस्तान के अंदर 12-18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह हिजबुल मुजाहिदीन के सबसे बड़े शिविरों में से एक है। यह कठुआ, जम्मू क्षेत्र में आतंकवाद फैलाने के लिए नियंत्रण केंद्रों में से एक है। इस शिविर ने पठानकोट वायुसेना बेस कैंप पर हमले की योजना बनाई और उसका निर्देशन किया। कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि किसी भी सैन्य प्रतिष्ठान को निशाना नहीं बनाया गया और अब तक पाकिस्तान में किसी नागरिक के हताहत होने की कोई खबर नहीं है। कर्नल सोफिया कुरैशी ने बताया कि नष्ट किया गया सियालकोट का सरजाल कैंप भी है, जो पाकिस्तान के अंदर 6 किलोमीटर दूर स्थित है। यह वह कैंप है, जहां जम्मू-कश्मीर के 4 पुलिसकर्मियों की हत्या में शामिल आतंकवादियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया था। नियंत्रण रेखा से क्रमशः 9 किमी और 13 किलोमीटर दूर स्थित मरकज अहले हदीस, बरनाला और मरकज अब्बास, कोटली को ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सशस्त्र बलों ने निशाना बनाया। उन्होंने बताया कि नष्ट हुए आतंकी शिविरों में मुरीदके का शिविर भी शामिल है, जहां 2008 के मुंबई आतंकी हमलों में शामिल आतंकवादियों अजमल कसाब और डेविड हेडली ने प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

### पहलगाम में हमारे निर्दोष भाइयों की क्रूर हत्या का है जवाब है ऑपरेशन सिंदूर : अमित शाह

**नई दिल्ली।** केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर भारत की ऐतिहासिक सैन्य कार्रवाई की सराहना करते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर पहलगाम में हमारे निर्दोष भाइयों की क्रूर हत्या के प्रति भारत की प्रतिक्रिया है। केंद्रीय गृहमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर आज कहा कि हमें अपने सशस्त्र बलों पर गर्व है। ऑपरेशन सिंदूर पहलगाम में हमारे निर्दोष भाइयों की क्रूर हत्या के प्रति भारत की प्रतिक्रिया है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार भारत और उसके लोगों पर किसी भी हमले का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

# ऑपरेशन सिंदूर पर बोली भाजपा- भारत ने पहलगाम नरसंहार का ले लिया बदला

● 'पहलगाम पर भारत का पैग़ाम- छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं।'

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** भारत ने बाईस अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद मंगलवार देररात पाकिस्तान के आतंकी संगठनों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई की। भारतीय वायुसेना ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पीओके में स्ट्राइक की। भारतीय जनता पार्टी ने आज ऑपरेशन सिंदूर पर कहा कि भारत ने पहलगाम का बदला ले लिया है।भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि पहलगाम पर भारत का पैग़ाम- छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा भारत की आत्मा पर हमला करने वालो को कड़ी सजा मिलेगी। भारत आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेकने में सक्षम भी है और संकल्प बद्ध भी है। मिटा देंगे आतंकवाद का नासूर ऑपरेशन सिंदूर। केंद्रीयमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भारतीय सेना ने पाक के कब्जे वाले कश्मीर और पाकिस्तान में आतंकवादियों के ठिकानों को नेस्तनाबूत कर दिया। आतंकवाद पर इस कमर तोड़ कार्रवाई से हमारे वीर जवानों ने एक बार फिर पूरे देश का मस्तक ऊंचा कर दिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत द्वारा आतंकवाद पर किया गया यह हमला न सिर्फ पहलगाम में निर्दोष भारतीयों की हुई हत्या का प्रतिशोध है अपितु यह इस बात का भी परिचायक है कि कोई भी अगर हमारे देश की एकता, अखंडता और नागरिकों की सुरक्षा को चुनौती देगा, तो भारत उसे उसके घर में घुसकर जवाब देने में सक्षम है।

# भारतीय सेना के साहस और पराक्रम पर पूरे देश को गर्व : नीतीश कुमार

**एजेंसी**

**पटना।** भारतीय सेना की ओर से पाकिस्तान पर किए गए ऑपरेशन सिंदूर की चौतरफा प्रशंसा हो रही है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की भी ऑपरेशन सिंदूर पर प्रतिक्रिया आयी है। उन्होंने भी कहा है कि भारतीय सेना के साहस और पराक्रम पर आज पूरा देश गौरवान्वित है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व पर हम सभी को अटूट विश्वास है। सोशल नेटवर्किंग साइट एक्स पर नीतीश कुमार ने लिखा जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए आतंकी हमले के जवाब में भारतीय सेना द्वारा 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर में आतंकवादियों के 09 ठिकानों को निशाना बनाया गया है। आतंकवाद के विरुद्ध पूरा देश एकजुट है। भारतीय सेना के साहस और पराक्रम पर पूरे देश को गर्व है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व पर हम सभी को अटूट विश्वास एवं गर्व है। जय हिंद।

# ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकी हमले में सुहाग खोने वाली बहनों को न्याय दिलाया : रेखा गुप्ता

● मुख्यमंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर के लिए सेना और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की धन्यवाद किया।

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बुधवार को कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने पहलगाम में आतंकी हमले सुहाग खोने वाली बहनों न्याय दिलाया है। उन्होंने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि वे सेनाओं और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का साधुवाद करती है कि उनकी निर्णायक शक्ति ने देश के 140 करोड़ भारतीयों को सम्मान दिलाया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफल के बाद आज भारत में एक संतोष की अनुभूति महसूस की जा रही है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि अगर कोई भारत को किसी भी तरह से छेड़ने की कोशिश करेगा तो हमारी सेनाएं और सरकार उसको छोड़ेगी नहीं। उन्होंने कहा कि किसी माथे का सिंदूर ना मिटने देंगे, मिटाया तो घर में घुस के मार देंगे। ऑपरेशन सिंदूर पहलगाम में मारे गए बेगुनाह 26 लोगों को श्रद्धांजलि है। उल्लेखनीय है कि भारत ने मंगलवार देर रात पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों पर हमला किया। पहलगाम आतंकी हमले के 15 दिन बाद भारत ने ये कार्रवाई की है।

# प्रधानमंत्री मोदी जो कहते हैं वह होता है : मुख्यमंत्री

**एजेंसी**

**भोपाल ।** भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों के खिलाफ की गई कार्रवाई पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जो कहते हैं वही होता है। भारतीय सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर को लेकर मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि हमारी सेना भी जगत जननी मां जगदंबा नवदुर्गा के समान शक्ति संपन्न है, जो दुश्मनों से निपटने में सक्षम है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत की गई कार्रवाई का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि पाकिस्तान के 9 आतंकवादी ठिकानों पर भारतीय सेना ने मुंह तोड़ जवाब दिया है, पूरा देश गौरवान्वित है, पूरा देश आनंद में है। ऑपरेशन सिंदूर नाम से ही स्पष्ट है, सिंदूर पर हाथ लगाने वाले- गलत निगाह दौड़ाने वाले को भारतीय सेना ने जवाब दिया है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि वह दृश्य अपने सामने दिखाई दे रहा है जिसमें प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि हर वह स्थान और हर वह व्यक्ति जो भारत की तरफ गलत निगाह से देखेगा, उसे मिट्टी में मिला देंगे। यह परिणाम सबने देखा है, मेरी अपनी ओर से प्रधानमंत्री मोदी को आतंकियों के खात्मे के इस जबरदस्त प्रहार की बधाई। हमारे रक्षा मंत्री, केंद्रीय गृहमंत्री, सरकार और पूरे भारतवासियों जिन्होंने पहलगाम पर एकजुटता दिखाई, वह सबके लिए गौरव का विषय है। मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि हम सब प्रधानमंत्री मोदी के साथ चट्टान की तरह खड़े हैं। राज्य सरकार प्रधानमंत्री मोदी के हर कदम के साथ है। हमारे देश के दुश्मनों को सबक सिखाते हुए भारतीय वीरता का जो परचम फहराया है।

# पंजाब के पांच जिलों के स्कूल-कालेज और करतारपुर साहिब कॉरिडोर बंद

**एजेंसी**

**चंडीगढ़।** भारतीय सेना के आपरेशन सिंदूर चलाने के बाद पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों में पुलिस ने बीएसएफ के साथ मिलकर गश्त बढ़ा दी है। पंजाब के पांच जिलों में शिक्षण संस्थानों और करतारपुर साहिब कॉरिडोर को भी बंद कर दिया गया है।मुख्यमंत्री भगवंत मान और आमआदमी पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल के कार्यक्रम रद्द कर दिए हैं। पाकिस्तान समर्थित आतंकियों ने 22 अप्रैल को पहलगाम में हमला कर 26 पर्यटकों की हत्या के बाद से दोनों देशों के बीच तनाव चल रहा है। केन्द्र सरकार ने कई प्रतिबंध लागू किए गए हैं। बीती रात भारत ने पाकिस्तान स्थित कई आतंकी ठिकानों पर सैन्य कार्रवाई की है। इसके बाद पंजाब के अमृतसर, गुरदासपुर, पठानकोट, फाजिल्का तथा फिरोजपुर जिलों में सामान्य की भांति आज सुबह बच्चे स्कूलों में आए लेकिन उन्हें वापस भेज दिया गया और स्कूल बंद कर दिए गए। पंजाब सरकार के साथ बातचीत के बाद जिला उपायुक्तों ने शिक्षण संस्थानों में छुट्टी का फैसला लिया। इन जिलों में जो बच्चे हॉस्टलों में रह रहे हैं, उन्हें घर भेजा जा रहा है। इसी बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में बीएसएफ के अधिकारियों ने आपात स्थिति के लिए स्कूलों की इमारतों को खाली रखने के लिए कहा है। अभी तक खुले करतारपुर साहिब कॉरिडोर को भी आज सुबह बंद कर दिया गया है। जिन लोगों ने पहले से ऑनलाइन बुकिंग करवाई हुई थी।

# पुंछ में पाकिस्तान की भारी गोलाबारी में 10 नागरिकों की मौत , 45 घायल

**जम्मू/श्रीनगर।** जम्मू-कश्मीर में पुंछ सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर मंगलवार रात पाकिस्तान की ओर से की गई भारी गोलीबारी में एक महिला और दो बच्चों समेत कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और 45 अन्य घायल हो गए। आधिकारिक सूत्रों ने यहां बताया कि पाकिस्तान की ओर से रात भर की गई भारी गोलीबारी में पुंछ सेक्टर में एक महिला, दो बच्चों समेत दस लोगों की मौत हो गई और 45 घायल हो गए। उन्होंने बताया कि सीमा पार से दागे गए मोर्टार शेल के घर में फटने से एक महिला की मौत हो गई जबकि उसकी 13 साल की बेटी घायल हो गई। सीमावर्ती जिला पुंछ पाकिस्तान की गोलाबारी से सबसे अधिक प्रभावित रहा। उन्होंने कहा, 'पुंछ सेक्टर के अन्य हिस्सों में करीब 14 लोग घायल हुए हैं और राजौरी के ठंडीकासी इलाके में दो महिलाओं समेत चार लोग घायल हुए हैं। उन्होंने कहा, पाकिस्तान की भारी गोलाबारी में कई घर और वाहन भी क्षतिग्रस्त हुए हैं। उन्होंने कहा कि मनकोट क्षेत्र के अलावा भारतीय सेना ने राजौरी के कृष्णा घाटी, शाहपुर, लाम, मंजाकोट और गंभीर ब्राह्मणा क्षेत्रों में भी पाकिस्तानी सेना को मुंहतोड़ जवाब दिया। मृतकों की पहचान मोहम्मद आदिल, सलीम हुसैन, रूबी कौर, मोहम्मद जैन (10), मोहम्मद अकरम (55), अमरीक सिंह, रंजीत सिंह, जोया खान (12), मोहम्मद रफी और मोहम्मद इकबाल के रूप में हुई है। ये सभी पुंछ के निवासी हैं।इस बीच सेना ने कहा कि 6-7 मई की रात को पाकिस्तानी सेना ने जम्मू-कश्मीर के सामने नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा के पार चौकियों से गोलीबारी की। जम्मू के संभागीय आयुक्त कार्यालय ने एक्स पर पोस्ट किया, मौजूदा स्थिति को देखते हुए जम्मू, सांबा, कठुआ, राजौरी और पुंछ में सभी स्कूल, कॉलेज और शैक्षणिक संस्थान आज (बुधवार) बंद रहेंगे। एक अधिकारी ने कहा, मौजूदा स्थिति के कारण जम्मू हवाई अड्डे को अगले नोटिस तक नागरिक उड़ानों के लिए बंद कर दिया गया है और यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे अपनी यात्रा की योजना तदनुसार बनाएं और उड़ान की स्थिति की जांच करें। कश्मीर के कुछ हिस्सों में बारामुल्ला, कुपवाड़ा और उरी से भी भारी गोलीबारी की रिपोर्टें है। स्थानीय लोगों ने कहा कि रात 11 बजे शुरू हुई भीषण गोलाबारी में कई घर क्षतिग्रस्त हो गए।

## संक्षिप्त समाचार

### गृहे गृहे गायत्री यज्ञ अभियान को लेकर मिजाचीकी में की गई बैठक

**मंडरो:** साहेबगंज शक्तिपीठ के सदस्यों व प्रखंड समन्वयक समन्वयक सुप्रिया वर्णवाल के नेतृत्व में हाट परिसर समीप मिजाचौकी दुर्गा स्थान में गृहे गृहे गायत्री यज्ञ के लिए एक विशेष बैठक की गई। बैठक में गायत्री शक्तिपीठ साहिबगंज के मुख ट्रस्टी संजीत चौधरी और हरिहर मंडल के द्वारा बताया गया की हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा विश्व स्तर पर एक साथ एक समय में गृहे गृहे गायत्री यज्ञ का आयोजन आगामी बुद्ध पूर्णिमा को होना निर्धारित है।12 मई 2025 को गायत्री यज्ञ का आयोजन होगा। बैठक में गृहे गृहे गायत्री यज्ञ अभियान को सफल बनाने को लेकर विचार विमर्श किया गया। मौके परइना देवी ,ललिता देवी ,सुनीता वर्नवाल। प्रियंका देवी,बिंदू कुमारी, पूजा कुमारी ,आनंदी देवी, श्यामा देवी, सरिता देवी,सुषमा देवी ,राधिका देवी विभा देवी,सियाराम मंडल समेत अन्य मौजूद थे।

### अज्ञात वृद्ध व्यक्ति का शव मिर्जाचौकी रेलवे साइडिंग समीप हुआ बरामद

**मंडरो:** अज्ञात वृद्ध व्यक्ति का शव मिर्जाचौकी रेलवे साइडिंग के समीप अवैध देशी महुआ शराब अड्डा से रेलवे पुलिस ने बरामद किया है। वही प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार वृद्ध की मौत अत्यधिक महुआ शराब पीने से हुई है। वही अभी तक शव की पहचान नहीं हो सकी है। मिली जानकारी के अनुसार रेलवे साइडिंग समीप महुआ शराब पीने के लिए लोगों की भीड़ जमा होती है। यहां रोजाना सैकड़ों लोग जमा होते हैं। कई गांवों के लोगों का आना जाना लगा रहता है। रेलवे पुलिस व क्षेत्रिय पुलिस द्वारा यहां छापेमारी अभियान चलाकर लोगों को भगाया जाता है। वही कुछ दिन के बाद फिर से यहां भीड़ जमा हो जाती है। उक्त जगह का एक और नाम ज्यादा प्रचलित है जिसका नाम है दारू गद्दी।

### जागरूकता रथ को गुलाम सरवर फ्लेग ऑफ करके रवाना किया

दिव्य दिनकर संवाददाता

**मांडर** - रूआर कार्यक्रम के तहत विद्यालय में नामांकन के लिए एवं ठहराव के लिए जागरूकता हेतु आज प्रखंड संसाधन केंद्र मांडर से एक जागरूकता रथ निकला गया । यह रथ मांडर प्रखंड अंतर्गत सभी 19 पंचायत के सभी स्कूल के पोषक एरिया में जाकर जागरूकता फैलाने का काम करेगा, रथ के माध्यम से सभी जगह हैंड बिल एवं पोस्टर आदि लगाई जा जाएगी एवं विभिन्न प्रकार के सॉन्ग से विद्यालय से बाहर रह रहे बच्चों को जागृत किया जाएगा साथ ही सरकारी विद्यालय में दिए जाने वाले सुविधाओं के बारे में संचार के माध्यम से संबोधित किया जाएगा ।रथ को रवाना करने डीडीओ कांति तिर्की , रंजीत कुमार , सीआरपी जयंत कुमार लकड़ा बिनोद कुमार बीआरपी स्मिता सिंह मो0 मुजम्मिल एवं दर्जनो शिक्षक के अलावा मध्य विद्यालय सोसाई आश्रम मांडर स्कूल के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

### ऑपरेशन सिंदूर एयर स्ट्राइक पहलगाम में उजड़े महिलाओं के सिंदूर का बदला है- सम्पा साहा

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:बीते 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान के आतंकवादियों ने कश्मीर घूमने गए पर्यटकों को उनका नाम पूछ पूछ कर गोली मार दिया गया था।दर्जनों महिलाओं ने अपने ही आंख के सामने अपने माथे के सिंदूर को उजड़ते देखा है। ठीक उसी के बाद से देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने ऐलान कर दिया था कि पाकिस्तान जिस भाषा में समझता है उसे उसी भाषा में जवाब दिया जाएगा। भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष सम्पा साहा ने बताया कि पहलगाम हमले के बाद ही प्रधानमंत्री ने ऐलान कर दिया इन आतंकवादियों को मिट्टी में मिला देंगे मंगलवार अर्धरात्रि भारतीय सेना द्वारा ऑपरेशन सिंदूर चलाया गया जिसमें पाकिस्तान के लगभग 100 किलोमीटर अंदर घुसकर पाकिस्तानी आतंकवादी संगठनों के कई ठिकानों पर एयर स्ट्राइक किया गया। पूरा देश ही नहीं बल्कि पूरा विश्व आज भारतीय सेना के पराक्रम की तारीफ कर रहा है। यह नया भारत है यह घर के अंदर घुसकर मारना जानता है। जिस प्रकार धर्म पूछ कर महिलाओं के माथे का सिंदूर उजाड़ा गया था आज भारतीय सेवा ने उनके घर के अंदर घुसकर ऑपरेशन सिंदूर चलाया है। आज पूरा देश खुद को गर्वान्वित महसूस कर रहा है इसके लिए मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय सेना का आभार व्यक्त करती हूं कि देश के अंदर लोगों की भावनाओं का अपने सम्मान रखा है। यह कार्रवाई आतंकवादी गतिविधि का विरुद्ध निर्णायक संदेश है ऐसे जवाबी कार्रवाइयों से देश विरोधी गतिविधियों का मनोबल टूटेगा।

# पालोजोरी थाना अंतर्गत सार्वजनिक स्थानों पर चलाय गया छापेमारी अभियान.

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम देवघर जिलान्तर्गत कोटपा अधिनियम 2003 की धारा को लागु करने हेतु, सिविल सर्जन देवघर डॉ०युगल किशोर चौधरी एवं डॉ० मनोज कुमार गुप्ता, जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी-सह- नोडल पदाधिकारी एन०सी०डी० कोषांग देवघर के निदेर्शानुसार, राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम में कोटपा-2003 के अधिनियम, तम्बाकू एवं उनके उत्पाद की सार्वजनिक स्थानो पर धड़ल्ले से बिक्री को नियंत्रित करने के लिए स्वास्थ विभाग के एन०टी०सी०पी०(राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कर्यक्रम) देवघर से अभिमन्यु दांगी जिला सलाहकार एवं पालोजोरी थाना के पुलिस अवर निरीक्षक देवेंद्र कुमार सिंह के द्वारा सयुक्त रूप से चलाया अभियान । तम्बाकू उत्पादकों को लेकर बने कोटपा-2003 अधिनियम के विभिन्न धाराओं को प्रभावी रूप से अनुपालन करने के लिए पालोजोरी बाजार, चौक चोराहा एवं अन्य विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर कोटपा-2003 कानून का उल्लंघन करने वाले दुकानदारों के विरुद्ध छापामारी की गई । इस दौरान 6 दुकानदारों से 800 रूपया जुमार्ना वसूला गया । जिसकी जानकारी देते हुए पालोजोरी थाना के पुलिस अवर निरीक्षक देवेंद्र कुमार सिंह एवं जिला परामर्शी अभिमन्यु कुमार दांगी ने बताया कि तम्बाकू उत्पाद बेचने वाले दुकानदार अपने दुकानों पर सिगरेट के विज्ञापन वाले पोस्टर लगा कर प्रचार- प्रसार करना धारा 5 उल्लंघन करना है, बिना चेतावनी फोटो वाले तम्बाकू उत्पाद की बिक्री करना धारा 7 उल्लंघन करना है, साथ ही ये भी देखा गया की स्कूल परिसर से एक सौ गज की दुरी पर किसी भी प्रकार के नशीली पदार्थ की बिक्री करना मना है जो की अधिनियम कोटपाअ2003 की धाराओ का सीधे उल्लंघन करना है आज छापेमारी के दौरान कई दुकानों से विज्ञापन वाले पोस्टर को हटाते हुए सुझाव दिया गया कि भविष्य में ऐसी गलती ना करें ।

# डिवाइन पब्लिक स्कूल देवघर में नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

डिवाइन पब्लिक स्कूल देवघर में नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह आयोजन विशेष तौर पर विद्यालय की सचिव सह प्रधानाध्यापिका ममता किरण के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर कराया गया जिससे बच्चों को इसका नि:शुल्क लाभ प्राप्त हो सके। शिविर के माध्यम से बच्चों के आंखों की जांच देवघर के सत्संग चौक स्थित आई केयर ऑप्टिकल्स के द्वारा किया गया। जिसमें नेत्र विशेषक (ओप्टोमेट्रिस्ट) मिशा के साथ सहयोगी मनमित व उनके टीम का सहयोग रहा। इस जांच शिविर के दौरान कक्षा 6 से 10 तक के कुल 166 बच्चों के नेत्रों की जाँच की गई। जांच में पता चला की कुल 43 बच्चों में आंखों से जुड़ी कई तरह की समस्याएं थी। जिन बच्चों में समस्याएं पाई गई उनके माता-पिता को तुरंत सूचित किया गया और उनसे आग्रह किया गया कि वह अपने बच्चों के आंखों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें और उचित चिकित्सा सहायता लें। प्रधानाध्यापिका ममता किरण ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा की आंख हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है इसकी देखभाल में हमेशा सचेत एवं सजग रहना चाहिए शरीर के बाहर एवं आंतरिक विकार दिखाई देते हैं या महसूस किए जा सकते हैं पर आंखों की समस्याएं अक्सर धीरे-धीरे आती है व उन्हें महसूस करना मुश्कल होता है जो कि समय के साथ बढ़ जाने के बाद ही पता चलता है अतः समय-समय पर अपने आंखों की जांच करा लेनी चाहिए। ममता किरण ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

# वाद विवाद प्रतियोगिता मे अनन्या कुमारी बनी टॉपर

दिव्य दिनकर संवाददाता

रांची - आज डी.ए.वी.शिक्षा दीप कमड़े विद्यालय मे रविंद्रनाथ टैगोर जी की जयंती पर विद्यालय के शिक्षक शुभम कुमार एवं मिस साक्षी देव के निर्देशन मे बाद विवाद एवं निबंध प्रतियोगिता कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों के बीच संपन्न हुई जिसमे जज की भूमिका प्राचार्य अनिल कुमार रॉय ने निभाई ।प्रतियोगिता की समय 1 घंटे निर्धारित कि गई ।प्रतियोगिता मे प्रथम अनन्या कुमारी,द्वितीय निहारिका मिश्रा,तृतीय मानसी कच्छप एवं चतुर्थ स्नेहा कुमारी घोषित की गई। टॉपर विद्यार्थियों ने टैगोर जी के जीवन इतिहास को बतलाते हुए कहा एक महान बंगाली कवि,लेखक,चित्रकार,नाटककार एवं संगीतकार थे।उनका जन्म कलकत्ता मे 07 मई 1861, उनके पिता का नाम स्व.देवेन्द्रनाथ टैगोर,माता का नाम स्व.शारदा देवी एवं पत्नी का नाम मृणालिनी देवी था।वे प्रथम नोवेल पुरस्कार विजेता थे लोग उन्हें गुरुदेव एवं कवि गुरु के नाम से भी जानते थे।उनका निधन 07 अगस्त 1941 को हुआ था। मौके पर विशिष्ठ अतिथि के रूप मे उपस्थित विद्यालय के संस्थापिका नीलम देवी,निदेशक शिवनंदन पाठक,प्रशासनिक पदाधिकारी लालमोहन पाठक, छात्र क्लब ग्रुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा,संरक्षक धनंजय कुमार दुबे ने बच्चों को बधाई देते हुए हौसला बढ़ाया।नीलम देवी ने कहा ऐसे कार्यक्रम के आयोजन से बच्चों मे आत्मविश्वास बढ़ता है और इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।शिवनंदन पाठक ने कहा इतिहास के बिना हम अधूरे हैं। इतिहास की जानकारी सभी लोगों को होनी चाहिए। प्राचार्य ने धन्यवाद ज्ञापित कर करते हुए कहा अभी सभी कक्षाओं मे निःशुल्क नामांकन जारी है।

### कार्यपालक पदाधिकारी जिला परिषद ने जिला परिषद की योजनाओं का किया स्थलीय निरीक्षण

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ बुधवार को कार्यपालक पदाधिकारी, जिला परिषद प्रीतिलता मुर्मू ने पाकुड़ प्रखंड अंतर्गत नरोत्तमपुर पंचायत में जिला परिषद अंतर्गत पीसीसी रोड एवं निकासी नाला का स्थलीय निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिया।

### डीसी की अध्यक्षता में हुई राजस्व विभाग की समीक्षात्मक बैठक

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ उपायुक्त मनीष कुमार की अध्यक्षता में राजस्व विभाग की मासिक समीक्षात्मक बैठक आहूत की गई। बैठक में जमीन का म्यूटेशन, भूमि सीमांकन, परिसोधन, ऑनलाइन लगान, भू-अधिग्रहण में प्रगति की समीक्षा की गई। समीक्षा के क्रम में लंबित म्यूटेशन के आवेदनों को लेकर उपायुक्त ने निर्देश दिया कि निर्धारित समयसीमा में ही आवेदनों का निष्पादन सुनिश्चित करें। वैसे आवेदन जो 90 दिनों से ज्यादा लंबित हैं उन्हें यथाशीघ्र निष्पादित करें। साथ ही उपायुक्त ने सभी अंचलाधिकारियों को निर्देश दिया कि सीएचसी निर्माण हेतु सम्बन्धित सीएचसी के पोषक क्षेत्राधीन स्वास्थ्य विभाग के मानक अनुरूप भूमि को चिन्हित किया जाय। बैठक में अपर समाहर्ता जेम्स सुरीन, भूमि सुधार उप समाहर्ता मनीष कुमार, अंचलाधिकारी, सीआई, हल्का कर्मचारी बैठक में उपस्थित थे।

# सेना ने दिखाया, भारत सुरक्षित हाथों में है अजहर

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़: पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में भारतीय सेना ने मंगलवार रात बड़ी कार्रवाई करते हुए ऑपरेशन सिंदूरर के तहत पाकिस्तान में 4 और पाक अधिकृत कश्मीर (PoK) में 5 आतंकी ठिकानों पर हमला किया। इस ऑपरेशन में बड़ी संख्या में आतंकियों को ढेर कर दिया गया है। सेना की इस जवाबी कार्रवाई से देशभर में उत्साह की लहर दौड़ गई है। आमजन से लेकर युवा तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय सेना की सराहना करते नजर आ रहे हैं। पाकुड़ में आजसू नेता अजहर इस्लाम ने इस ऑपरेशन को ऐतिहासिक बताते हुए कहा, भारत की महिलाओं का मांग का सिंदूर, भारत के सिर का ताज है। मोदी जी पहले ही कह चुके हैं कि हम किसी को छेड़ते नहीं, लेकिन अगर कोई हमें छेड़ता है तो हम उसे छोड़ते नहीं। ऑपरेशन सिंदूर आतंकवाद के खिलाफ एक निर्णायक कार्रवाई है जो विश्व शांति की दिशा में ऐतिहासिक कदम है। पूरा देश भारतीय सेना के साथ तन-मन-धन से खड़ा है। आजसू के जिलाध्यक्ष आलमगीर आलम ने कहा कि पाकिस्तान को जवाब देना जरूरीं तो उसके हौसले और बढ़ जाते।

**मॉक ड्रिल से पहले बढ़ा आत्मविश्वास**

गौरतलब है कि बुधवार को अलग-अलग जिलों में नागरिक सुरक्षा को लेकर मॉक ड्रिल आयोजित की गई। उससे ठीक पहले भारतीय सेना की इस सर्जिकल स्ट्राइक जैसी कार्रवाई ने नागरिकों में आत्मविश्वास और सुरक्षा का भाव पैदा किया है। अजहर ने कहा कि लोगों को महसूस हो रहा हैं कि देश पूरी तरह से सुरक्षित हाथों में है।

# साहेबगंज में आपदा प्रबंधन हेतु 12 कोषांगों का गठन

### सुरक्षा एवं राहत व्यवस्था को लेकर उपायुक्त ने की बैठक

**साहिबगंज:** भारत सरकार, गृह मंत्रालय से प्राप्त निदेर्शों के आलोक में आज उपायुक्त- सह- जिला दंडाधिकारी हेमंत सती की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिले की सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने तथा आपदा की स्थिति में त्वरित राहत एवं बचाव कार्य सुनिश्चित करने को लेकर विस्तार से चर्चा की गई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि किसी भी आपात स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए जिला स्तर पर कुल 12 विशेष कोषांगों का गठन किया गया है । ये कोषांग विभिन्न सेवाओं को समर्पित होंगे, जिनमें मुख्य रूप से मुख्यालय सेवा (Headquarter Service), वार्डन सेवा (Warden Service), संचार सेवा (Communication Service), हताहत सेवा (Casualty Service), अग्निशमन सेवा (Fire Fighting Service), बचाव सेवा (Rescue Service), कल्याण सेवा (Welfare Service), मलबा हटाने की सेवा (Salvage Service), शव निस्तारण सेवा ((Corpse Disposal Service), डिपो एवं परिवहन सेवा (Depot & Transport Service), प्रशिक्षण सेवा (Training Service) तथा आपूर्ति सेवा (Supply Service) शामिल हैं।उपायुक्त ने पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रत्येक कोषांग में कर्मियों की तैनाती सुनिश्चित की जाए तथा सभी संबंधित विभाग समन्वय स्थापित करते हुए समय-समय पर अभ्यास एवं समीक्षा करें। इस पहल का उद्देश्य किसी भी आपदा की स्थिति में त्वरित, समन्वित एवं प्रभावी कार्रवाई को सुनिश्चित करना है।

### प्रखंड विकास पदाधिकारी ने बोरियो स्वास्थ्य केंद्र का किया निरीक्षण

**साहिबगंज:** प्रखंड विकास पदाधिकारी नागेश्वर साव ने बोरियो सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल परिसर में चल रहे मरम्मती कार्यों का जायजा लिया और भवन अभियंता को गुणवत्ता के साथ कार्य शीघ्र पूर्ण करने का निर्देश दिया।उन्होंने ओपीडी, लैब, प्रसव वार्ड एवं दवा वितरण केंद्र का भी गहन निरीक्षण किया। बीडीओ ने सभी संबंधित कर्मियों को निर्देशित किया कि मरीजों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं तथा किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।निरीक्षण के दौरान बीडीओ ने अस्पताल की स्वच्छता व्यवस्था पर विशेष ध्यान देते हुए सफाई कर्मचारियों को परिसर के अंदर एवं बाहर नियमित सफाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य केंद्र की स्वच्छता एवं व्यवस्था सीधे आम जनता की सेवा से जुड़ी है, इसलिए इसमें किसी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए।निरीक्षण के समय चिकित्सा पदाधिकारी समेत अन्य स्वास्थ्यकर्मी भी मौजूद थे। बीडीओ ने बेहतर कार्य करने वाले कर्मियों की सराहना भी की।

### .मरने वाले जन्नत चले गए- ऑपरेशन सिंदूर के तहत कार्रवाई पर बोला- मसूद अजहर

**लखनऊ:** भारत की सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत की गई कार्रवाई में आतंकी संगठन जैश ए मोहम्मद के प्रमुख मसूद अजहर के परिवार के 10 लोगों की मौत हुई है। इस बात की पुष्टि मसूद अजहर ने बयान जारी कर बताया है। आतंकी ने कहा मरने वाले जन्नत चले गए है। मेरे परिवार के लोगों को खुशी मिल गई है, लेकिन भारत की इस कार्रवाई के बाद मसूद अजहर ने एक बार फिर भारत को धमकी दी है। भारत ने पाकिस्तान में एयर स्ट्राइक कर 9 आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया है। ये हमले 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत बहावलपुर, मुरीदके, बाघ, कोटली और मुजफ्फराबाद में किए गए। पाकिस्तान ने इस हमले में 26 लोगों के मारे जाने की पुष्टि की है।

## संक्षिप्त समाचार

### एनटीपीसी नबीनगर में हुई क्रिकेट लीग की शुरूआत

**नबीनगर प्रीमियर लीग खेल भावना और टीम वर्क का अद्भुत संगम**

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के नबीनगर स्थित एनटीपीसी नबीनगर में सोमवार को नबीनगर प्रीमियर लीग (NPL) 2025 की उत्साहपूर्ण शुरूआत हुई। इस टूनार्मेंट का उद्घाटन एनटीपीसी नबीनगर के परियोजना प्रमुख एवं कार्यकारी निदेशक श्री एल. के. बेहरा ने किया। उन्होंने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा, ऐसे आयोजन कर्मचारियों में ऊर्जा, सकारात्मकता और आपसी सहयोग को बढ़ावा देने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।ह इस प्रतिष्ठित टूनार्मेंट का पहला मुकाबला HOP कऔर GM (O&M) ककके बीच खेला गया, जिसमें परियोजना के वरिष्ठ अधिकारियों ने खेल मैदान में अपना क्रिकेट कौशल प्रदर्शित किया। इस मैच में GM (O&M) ककी टीम विजयी रही। NPL का आयोजन हर साल नबीनगर स्पोर्ट्स काउंसिल द्वारा किया जाता है। इस वर्ष टूनार्मेंट में कुल छह टीमें हिस्सा ले रही हैं, जो विभिन्न विभागों के कर्मचारियों से मिलकर बनी हैं। लीग के मुकाबले अगले तीन सप्ताह तक चलेंगे और 24 मई 2025 को एक भव्य समापन समारोह के साथ टूनार्मेंट का फाइनल मैच खेला जाएगा। इस टूनार्मेंट का उद्देश्य कर्मचारियों के बीच स्वास्थ्य, फिटनेस, टीम वर्क और आपसी विश्वास को बढ़ावा देना है। ऐसे आयोजन कर्मचारियों को तनावमुक्त रहने में मदद करते हैं और कार्यस्थल पर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। यह आयोजन खेलों के माध्यम से युवा कर्मचारियों में नेतृत्व, अनुशासन और टीम भावना जैसे गुणों के विकास का भी सशक्त माध्यम बन रहा है।

### हज पर जाने वाले को गांव वालों ने दी विदाई

रिपोर्ट- अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह( औरंगाबाद)हसपुरा प्रखंड के गहना गांव से सोमवार को हज अदा करने के लिए चार लोग रवाना हुए। इस दौरान लोगों ने माला पहना कर उनको रवाना किया। गहना गांव के इश्तियाक खां व उनकी पत्नी रुबी खातून और सुहैल अनवर व उनकी पत्नी समीमा अख्तर एक साथ हज के लिए रवाना हुए। सभी हज यात्री 8 मई को दिल्ली एयरपोर्ट से मदीना शरीफ के लिए रवाना होंगे। वहां 8 दिन रुककर मक्का शरीफ जाएंगे जहां हज का कार्य पूरा करेंगे। गहना गांव के तउवाब खां, शिक्षक इजहार अहमद उर्फ गुड्डू, हाफिज इरफान, हाजी जियाउर्रहमान, नइम इमाम, हाजी मुश्ताक खां समेत बड़ी संख्या में गांव वासियों ने मस्जिद में पहुंचकर जायरीनों को विदाई दी। लोगों ने फूल मालाएं पहनाकर उनका सम्मान करते हुए सफर की कामयाबी के लिए दुआएं दी। साथ ही मक्का-मदीना शरीफ पहुंचकर अमन-चैन की दुआ करने की दरख्वास्त की। मौके पर हाजी जियाउर्रहमान ने कहा कि मुस्लिम मोमिनों को हज करने का मौका अल्लाह की रहमत से मिलता है और मक्का-मदीना शरीफ की यात्रा नसीब वालों को ही नसीब होती है। उन्होंने कहा कि हज वर्ष में केवल एक बार होता है। जो बकरीद पर्व के पहले हज पर जाते हैं। वैसे उमरा के लिए साल में कभी भी जाया जा सकता है। हज का पूरा अरकान करने में लगभग 45 दिन लग जाते है।

### मुंगेर में गौरव भाटिया बोले, आतंकवाद को नेस्तनाबूद किया जाएगा

रणजीत विद्यार्थी

मुंगेर : बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया बुधवार को मुंगेर जिले में वक्फ सुधार जनजागरण अभियान में हिस्सा लेने पहुंचे। इस दौरान उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर पर अपनी राय रखी। साथ ही कहा कि अब ये बात स्पष्ट हो गई है कि आतंकवाद को नेस्तनाबूद किया जाएगा। एक दिवसीय दौरे पर मुंगेर पहुंचे भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया तोपखाना बाजार स्थित प्रदेश प्रवक्ता प्रो. अफजर शमशी के आवास पर वक्फ सुधार जन जागरण अभियान में हिस्सा लिया। इस मौके पर गौरव भाटिया ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि गर्व के साथ कह सकते हैं कि जिस तरह भारत की सेना ने करारा जवाब दिया है, आतंकवाद को समाप्त करने के लिए भारत की वीर सेना पूरे विश्व में सबसे वीर है। गौरव भाटिया ने कहा, साथ ही साथ जिस तरह पाकिस्तान पर हमला किया गया है, अब ये बात स्पष्ट हो गई है कि आतंकवाद को नेस्तनाबूद किया जाएगा। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह कहा कि आतंकवाद के आका को भी नेस्तनाबूद किया जाएगा। वहीं, वक्फ संशोधन कानून को लेकर उन्होंने कहा कि इस कानून से अल्पसंख्यक और मुस्लिम समाज को सशक्तिकरण हो इसके अधिकार मिलेंगे। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मुसलमान के एक हाथ में कुरान होगी और एक हाथ में कंप्यूटर। उन्होंने कहा कि वोट बैंक की सौदागर तुष्टिकरण करने वाली राजनीतिक तमाम पार्टी कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और टीएमसी रही है। उन्होंने कहा, इन्होंने कभी भी अल्पसंख्यकों की मुसलमान समाज की चिंता नहीं की।

# भारत की सेना और मोदी सरकार पर देशवासियों को गर्व है- रामानुज पाण्डेय

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष एवं चाणक्य परिषद के जिला अध्यक्ष रामानुज पाण्डेय ने एवं भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष पूर्व लोकसभा प्रत्याशी पूर्व प्रखंड प्रमुख कृष्ण बल्लभ प्रसाद सिंह बबुआ जी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए देश सेना और सरकार को बधाई इस ऑपरेशन से आज देश के 28 परिवारों को न्याय मिला है। नापाक पाक को अब यह समझ लेना चाहिए कि इस देश में बुजदिलों की सरकार नहीं है जो हिंसा से डर कर अपने जमीन पर गद्दारों का देश बना दे। एक-एक भारतीय अपने मातृ भूमि के एक एक इंच जमीन और आर्तकियों से बदला लिया जाए इसके लिए जान कुर्बान करने के लिए तैयार है। इस बात को देश की सरकार और दुनिया के लोग बढ़िया से समझते हैं मूर्ख पाकिस्तान इस बात को नहीं समझता और अपने बाप भारत से ही बार-बार लड़ने की मूर्खता कर बैठता है जबकि हर बार की लड़ाई में उसे बड़ी कीमत पड़ती है देश का टुकड़ा तक होना पड़ा है कई बार भारतीय फौज के सामने समर्पण करना पड़ा है। सामने से लड़ने की हिम्मत नहीं तो आतंकी भेज कर कायराना हरकतों को अंजाम देते हैं। ये मूर्ख आज भी हजार वर्ष

पहले के मध्ययुगीन काल में जी रहे हैं जब हिंसा के बल पर यह दुनिया में जहाँ चाहे वहाँ राज करने चले जाते थे फिर से आतंक के बल पर और धार्मिक उन्माद फैलाकर दुनिया में यह रक्तपात करना चाहते हैं लेकिन यह भूल रहे हैं यह भारत वह भारत नहीं है आज भारत बहुत बदल चुका है अब अपनी जमीन छोड़कर भागने वाला भारत नहीं है बल्कि दूसरे की जमीन में घुसकर मार करने वाला भारत है। पाकिस्तान या तो पीओके खाली करें दुनिया के सामने आतंकवाद से बाज आने का कसम खाए माफी मांगे अन्यथा भारत की सरकार और भारत की सेना के साथ एक-एक भारतीय अपनी जान की बाजी लगाने के लिए तैयार खड़ा है अब भारत की धरती पर आतंकवाद बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। धर्म के आधार पर हिंसा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। दोनों पूर्व अध्यक्षों ने कहा कि बिना युद्ध के स्थाई शांति संभव नहीं है साथ ही देश के अंदर भी नागरिक सुरक्षा के प्रति सरकार और समाज दोनों को जागरूक रहने की जरूरत है। सभी धर्म के लोग पूरी स्वतंत्रता के साथ अपने मत मजहब को माने लेकिन एक देश के एक नागरिक के रूप में चट्टानी एकता के साथ रहें आतंकियों और घुसपैठियों को देश और समाज में शरण और संरक्षण देने से बचें। भारत सरकार देश में स्थाई शांति के लिए इस बार बिल्कुल आर पार की कार्रवाई करे। इस तरह से निर्दोष लोगों की हत्या देश और समाज को स्वीकार नहीं है।

## पीएम श्री अनुग्रह मध्य विद्यालय के बच्चे नशा विरोधी अभियान के बने हिस्सा

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय स्थित पीएम श्री अनुग्रह मध्य विद्यालय में विद्यालय के प्राचार्य उदय कुमार सिंह की अध्यक्षता में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत बच्चों की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग के अंतर्गत संपन्न हुई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे सामाजिक सुरक्षा के सहायक निदेशक महेश आनंद ने बच्चों को नशापान की विभीषिका से अवगत कराया। तम्बाकू के दुष्परिणामों का विस्तार से चर्चा किए। बच्चों को अपने आस पास जाकर लोगों को शराब ड्रग्स एवं तम्बाकू सेवन ना करने हेतु प्रेरित करने को कहा। प्राचार्य उदय कुमार सिंह ने कुछ व्यवहारगत नशाएं यथा मोबाइल की लत, वीडियो गेमिंग एवं इंटरनेट स्क्रोलिंग करते रहने के प्रति भी बच्चों को सचेत किया एवं इससे होने वाले डिप्रेशन आदि की समस्याओं के बारे में भी बताया।इस कार्यक्रम में भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के विशेष प्रशिक्षक के रूप में पहुंचे मंटू कुमार ने बल देकर बच्चों

को बताया कि आरंभिक अवस्था में तम्बाकू या नशा पान उनकी कॉग्निटिव क्षमता घटा सकती है।उन्होंने बिहार के नशा मुक्ति अभियान के दृष्टिगोचर हो रहे फायदे की जानकारी बच्चों को दिए। हेडमास्टर उदय कुमार सिंह ने इस महत्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण वर्कशॉप के लिए अतिथियों के प्रति आभार जताया।

## भारतीय सेना की सफलता पर ABVP पाकुड़ ने मनाया जश्न

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) पाकुड़ इकाई द्वारा भारतीय सेना के 'ऑपरेशन सिंदूर' की अभूतपूर्व सफलता पर हर्ष और गौरव के साथ जश्न मनाया गया। इस अवसर पर कार्यकताओं ने शहर के हाटपाड़ा चौक पर एकत्र होकर जोरदार आतिशबाजी की और 'भारतीय सेना ज़िंदाबाद', 'भारत माता की जय' जैसे गगनभेदी नारों से माहौल को देशभक्ति से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम की अगुवाई नगर मंत्री हर्ष भगत ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा, ₹ऑपरेशन सिंदूर ने एक बार फिर साबित कर दिया कि भारतीय सेना किसी भी परिस्थिति में देश की रक्षा करने में सक्षम है। यह केवल एक सैन्य सफलता नहीं, बल्कि हर भारतवासी के आत्मगौरव का प्रतीक है। विद्यार्थी परिषद इस विजय का हर्ष मनाते हुए सेना के प्रति आभार और सम्मान व्यक्त कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि विद्यार्थी परिषद राष्ट्रभक्ति, समाजसेवा और युवाओं में जागरूकता लाने के कार्य में सदैव अग्रणी रही है, और आगे भी ऐसे प्रत्येक राष्ट्रहित के प्रयासों में अपनी भूमिका निभाती रहेगी। इस अवसर पर परिषद के जिला सोशल मीडिया संयोजक तन्मय पोद्दार, नगर एस एफ डी संयोजक अनिकेत,खेल प्रमुख अनुराग गोस्वामी, प्रेम प्रताप सिंह समेत बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

## महिला संवाद कार्यक्रम सभी ग्यारह प्रखंडों के चयनित कुल तीस ग्राम संगठनों में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले में महिला संवाद कार्यक्रम सभी ग्यारह प्रखंडों के चयनित कुल तीस ग्राम संगठनों में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया` औरंगाबाद जिला में अभी तक 497 ग्राम संगठनो मे महिला संवाद का आयोजन किया जा चूका है` जिले में प्रतिदिन 15 महिला संवाद रथ का सञ्चालन दो पालियो मे किया जा रहा है महिला संवाद कार्यक्रम बिहार सरकार का महिलाओं के साथ सीधा संवाद करने की अनूठी पहल है । जहाँ महिला सशक्तीकरण संबंधी योजनाओं की जानकारी महिलाओं के साथ साझा की जा रही है । महिलायें इन योजनाओं से हुए सीधे लाभ की बात करती हैं और योजनाओं को और बेहतर बनाने की बात भी संजीदगी के साथ करती है` इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ अब अपने सपनों और आकांक्षाओं को खुलकर व्यक्त कर रही हैं । राज्य सरकार की पहल, महिला संवाद कार्यक्रम, उनके लिए उम्मीदों का एक ऐसा मंच साबित हो रहा है, जहाँ वे न केवल अपनी समस्याओं को उजागर कर रही हैं, बल्कि विकास की नई संभावनाओं की ओर भी इशारा कर रही हैं । इस कार्यक्रम के माध्यम से महिलाएँ अपनी अपेक्षाओं और आवश्यकताओं को सीधे सरकार तक पहुँचा रही हैं, वहीं सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर अपने जीवन में हुए बदलाव को साझा कर दूसरों को प्रेरित भी कर रही हैं । राज्य सरकार की योजनाओं से लाभान्वित महिलाएं –सुषमा देवी ,पनपती देवी,कस्तूरी देवी, अदि ने अपने अनुभव साझा किए और बताया कि कैसे इन योजनाओं का लाभ लेकर उन्होंने अपने परिवार के जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार किया है और गाँव की अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रही हैं। पिछले बीस सालों में राज्य में हुए विकास को उत्तरोत्तर गति प्रदान करने के उद्देश्य से महिला संवाद कार्यक्रम में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो रही हैं ' जहाँ गाँव की महिलाएं गाँव के विकास के लिए अपनी इच्छाएं एवं आकांक्षाओं को सुचिवद्ध करा रही हैं ' ग्राम संगठन स्तर पर राज्य के सभी जिलों में महिला संवाद आयोजित किये जा रहे हैं` साथ ही राज्य सरकार द्वारा संचालित लोक कल्याणकारी योजना की सफलता पर आधारित फिल्मे भी महिला संवाद रथ में प्रदर्शित की जा रही है ' इसके साथ ही महिला सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन के लिए राज्य में संचालित योजनाओं से संबंधित लीफलेट महिलाओं के बीच वितरित किया जा रहा है ताकि अब तक अगर कोई भी महिला योजनाओं का लाभ नहीं ले पाई है तो उससे जुड़कर अपने जीवन में बदलाव लाये और मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार का माहिलाओ के नाम संदेश भी सभी को दिया जा रहा है सागर ग्राम संगठन,कर्माभगवान,औरंगाबाद के महिला संवाद मे श्री श्रीकांत शास्त्री जिला पदाधिकारी,औरंगाबाद,प्रखंड विकास पदाधिकारी,औरंगाबाद, श्री पवन कुमार ,जिला परियोजना प्रबंधक,जीविका, श्री पंचम दांगी, प्रबंधक सूक्ष्म वित्त , श्री श्रुतिकांत पाठक ,प्रखंड परियोजना प्रबंधक, औरंगाबाद एवं सभी माहिलाओ ने भाग लिया। जिला पदाधिकारी द्वारा महिला संवाद के बारे बताया गया की बिहार सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न विभिन्न तरह की योजना चलाई जा रही है । जिला पदाधिकारी,औरंगाबाद द्वारा कन्या उत्थान योजना ,मुख्यमंत्री महिला उधमी योजना,बालिका साईकिल योजना,छात्रवृत्ति योजना एवं आवास योजना के बारे मे विस्तार से बताया एवं इसका लाभ लेने के लिए सभी को प्रेरित किया ' महिला संवाद कार्यक्रम बिहार की ह्यआधी आबादीह्न को राज्य के विकास में सहभागी बना रहा है और यह पहल राज्य को सामाजिक रूप से सशक्त एवं समावेशी विकास की दिशा में अग्रसर कर रही है।

## सदर प्रखंड के चार पंचायत के महादलित टोले में विशेष शिविर का आयोजन

दिव्य दिनकर जिला संवाददाता काजल गुप्ता

मुंगेर। सदर मुंगेर प्रखंड अंतर्गत बुधवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी आरके राघव की अगुवाई में सदर प्रखंड के चार पंचायत में डॉ भीमराव अंबेडकर सर्व सेवा अभियान के अंतर्गत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति टोले में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का शुभारंभ शिविर के माध्यम से किया गया। शिविर में बिहार सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजना में 22 महत्वपूर्ण योजना का लाभ महादलित परिवार को पहुंचाने हेतु शुरूआत की गई। महा दलित परिवार के बीच राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, जन्म प्रमाण पत्रों वितरण प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा विभिन्न पंचायत में वितरित किया गया। वहीं शिविर में प्रभारी के रूप में उपस्थित प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी शिवम पुरी गोस्वामी, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी एकता कुमारी, प्रखंड कल्याण पदाधिकारी श्रावणी गुप्ता, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी प्रियदर्शनी, प्रखंड सांख्यिकी पदाधिकारी जितेंद्र कुमार, सहकारिता पदाधिकारी सह शिक्षा पदाधिकारी विद्यासागर, प्रभारी सुशील कुमार झा सहित प्रखंड एवं पंचायत स्तरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे।

# सदर प्रखंड, औरंगाबाद में 20 सूत्री कार्यालय का भव्य उद्घाटन समारोह सम्पन्न

## एनडीए के शीर्ष नेताओं की गणमान्य उपस्थिति, जनसेवा को समर्पित नया अध्याय

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय स्थित सदर प्रखंड में 20 सूत्री कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के नवनिर्मित कार्यालय का उद्घाटन समारोह आज ऐतिहासिक गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष श्री मनोज कुमार सिंह एवं संचालन उपाध्यक्ष श्री राकेश कुमार सिंह ने की। इस कार्यालय का उद्घाटन केवल एक भवन का उद्घाटन नहीं, बल्कि जनता के अधिकारों, समस्याओं के समाधान, और सरकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने के प्रति प्रतिबद्धता का उद्घोष है। नेतृत्व की सोच और गंतव्यः अध्यक्ष श्री मनोज कुमार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यालय जन संवाद का सशक्त माध्यम बनेगा। यहां हर तबके की समस्याएं सुनी जाएंगी और संबंधित विभागों के माध्यम से त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। ₹हमारा प्रयास रहेगा कि कोई भी पात्र व्यक्ति सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे, ।वहीं उपाध्यक्ष श्री राकेश कुमार सिंह ने कहा, इस कार्यालय का निर्माण मात्र ईंट-पत्थर का ढांचा नहीं है, बल्कि यह सुशासन, पारदर्शिता और जनसेवा की जीवंत प्रतीक बनेगा। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि 20 सूत्रीय कार्यक्रम सिर्फ कागजों में न रहे, बल्कि धरातल पर लागू हो।

उद्देश्य और प्राथमिकताएं इस कार्यालय के माध्यम सेः सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाएगा। गांव-गांव

तक योजनाओं की जानकारी और पहुँच बनाई जाएगी। जन शिकायतों का रजिस्ट्रेशन और समाधान की प्रक्रिया पारदर्शी होगी। युवाओं, महिलाओं और वंचित वर्गों के उत्थान हेतु विशेष पहलें की जाएंगी। विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति समारोह की शोभा बढ़ाने पहुंचे एनडीए के सभी घटक दलों के जिला अध्यक्ष और वरिष्ठ नेता। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक रफीगंज एवं वर्तमान जदयू जिला अध्यक्ष सह जिला 20 सूत्री उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार सिंह उपस्थित रहे। अन्य प्रमुख उपस्थित नेताओं में शामिल रहे भाजपा जिला अध्यक्ष श्री बिजेंद्र सिंह चंद्रवंशी लोजपा (रा) जिला अध्यक्ष श्री चंद्रभूषण सिंह उर्फ सोनू सिंह भाजपा उपाध्यक्ष एवं रेडक्रॉस अध्यक्ष श्री सतीश कुमार सिंह नगर परिषद अध्यक्ष श्री उदय गुप्ता हम पार्टी के राष्ट्रीय सचिव श्री सुनील चौबे हम के वरिष्ठ नेता श्री हरेंद्र सिंह इसके अलावा विभिन्न पंचायत प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता एवं मीडियाकर्मी भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सदस्यों की सक्रिय सहभागिताः समिति के सभी 20 सूत्री सदस्य शशिकांत कुमार, रितेश कुमार सिंह, विकास कुमार मिश्रा, नंदिता सिंह, नागेंद्र चंद्रवंशी, महेंद्र प्रजापति, मोहम्मद सैयद मुजफ्फर कादरी, रॉकी राज, भरत सिंह, सुधीर सिंह, संजय गुप्ता, नीलम देवी एवं अमित कुमार न सिर्फ आयोजन में भाग लिया बल्कि अपने-अपने क्षेत्र में योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए संकल्प लिया। समापन संदेश कार्यक्रम के अंत में वक्ताओं ने कहा कि यह कार्यालय आने वाले समय में न्याय, पारदर्शिता, सेवा और विकास का नया प्रतीक बनेगा। यह समिति आने वाले दिनों में जनहित में विशेष शिविर, जागरूकता अभियान, पंचायत स्तरीय फॉलोअप बैठकें और योजनागत मूल्यांकन जैसे कार्यों को भी गति देगी। 20 सूत्री कार्यालय अब नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करेगा, जिससे लोकतंत्र की असली ताकत आमजन तक पहुंचे।

# भारत-पाक के बीच परमाणु युद्ध हुआ तो कुछ न बचेगा !

## >> विचार

**“ इतिहास बताता है कि युद्ध मानव समाज का एक स्थायी भाव रहा है। प्राचीन भारत में मौर्य, गुप्त और चोल साम्राज्य युद्धों के माध्यम से ही बने और बढ़े। मौर्य सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद युद्ध की विभीषिका देख कर बौद्ध धर्म अपनाया और शांति का रास्ता चुना। समुद्रगुप्त ने उत्तर से दक्षिण तक विजयों की श्रृंखला से तो चोलों ने समुद्री युद्धों से दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत का प्रभाव स्थापित किया। लेकिन हर साम्राज्य की नींव में लाखों लाशें और उजड़ी बस्तियाँ होती हैं। 8वीं से 10वीं सदी तक चला त्रिपक्षीय युद्ध (पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट) इसका सबसे जीवंत उदाहरण है। लगभग 200 वर्षों तक कन्नौज पर कब्ज़े के लिए तीनों शक्तियाँ लड़ती रहीं।**

**पंकज श्रीवास्तव**

जब भी भारत पर कोई आतंकी हमला होता है, मीडिया और सोशल मीडिया पर पाकिस्तान से युद्ध के नगाड़े बजने लगते हैं। पहलगाम हमले के बाद भी यही हुआ। युद्ध की बातें इस तरह हो रही हैं जैसे भारत और पाकिस्तान की सेनाएँ सीमा पर आमने-सामने खड़ी हों और किसी भी क्षण बम बरसने लगेंगे। लेकिन क्या युद्ध का रास्ता इतना आसान है? क्या परमाणु हथियारों से लैस देशों के बीच युद्ध के नतीजों पर नहीं सोचना चाहिए? भारत और पाकिस्तान के पास 150 से अधिक परमाणु हथियार हैं। ऐसे में एक छोटी सी चूक भी महाविनाश की वजह बन सकती है। परमाणु युद्ध की कल्पना ही भयावह है- दिल्ली, कराची, इस्लामाबाद और मुंबई जैसे शहर मिनटों में राख में बदल सकते हैं। पहले ही दिन करोड़ों मौतें, उसके बाद 'न्यूक्लियर विंटर' और वैश्विक अकाल। यह केवल उपमहाद्वीप नहीं, पूरी मानव सभ्यता के लिए ख़तरा होगा।

**युद्ध की परंपरा :** इतिहास बताता है कि युद्ध मानव समाज का एक स्थायी भाव रहा है। प्राचीन भारत में मौर्य, गुप्त और चोल साम्राज्य युद्धों के माध्यम से ही बने और बढ़े। मौर्य सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद युद्ध की विभीषिका देख कर बौद्ध धर्म अपनाया और शांति का रास्ता चुना। समुद्रगुप्त ने उत्तर से दक्षिण तक विजयों की श्रृंखला से तो चोलों ने समुद्री युद्धों से दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत का प्रभाव स्थापित किया। लेकिन हर साम्राज्य की नींव में लाखों लाशें और उजड़ी बस्तियाँ होती हैं। 8वीं से 10वीं सदी तक चला त्रिपक्षीय युद्ध (पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट) इसका सबसे जीवंत उदाहरण है। लगभग 200 वर्षों तक कन्नौज पर कब्ज़े के लिए तीनों शक्तियाँ लड़ती रहीं। अंततः तीनों कमज़ोर हुईं और तुर्क आक्रमणकारियों के लिए भारत के द्वार खुल गए।

**विश्व युद्धों की सीख :** 20वीं सदी में जब युद्ध आधुनिक हथियारों से लड़े गए, तो मानवता की पीड़ा चरम पर पहुँच गई। प्रथम विश्व युद्ध ने लगभग डेढ़ करोड़ लोगों को निगल लिया, और द्वितीय विश्व युद्ध में यह संख्या आठ करोड़ तक पहुँची। हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु

हमले इस विनाश की पराकाष्ठा थे। इन हमलों ने दुनिया को यह अहसास कराया कि युद्ध अब केवल सेनाओं की भिड़ंत नहीं रह गया, यह पूरी मानवता का संकट बन चुका है।

**भारत-पाक युद्ध और परमाणु संकट :** भारत और पाकिस्तान की सैन्य ताक़तों की तुलना करें तो भारत स्पष्ट रूप से आगे है- 14 लाख सैनिक, आधुनिक मिसाइलें, और सात गुना ज़्यादा सैन्य बजट। फिर भी, पाकिस्तान के पास भी परमाणु हथियार हैं, और यही संतुलन युद्ध को रोकता रहा है। लेकिन जब युद्धोन्माद राजनीतिक लाभ का साधन बन जाए तो स्थिति विस्फोटक हो जाती है। हाल ही में पाकिस्तान के रक्षा मंत्री द्वारा यह स्वीकार करना कि उनके देश ने दशकों तक आतंकवादियों को प्रशिक्षण और समर्थन दिया, इस बात की पुष्टि करता है कि भारत की चिंताएँ निराधार नहीं हैं। लेकिन क्या इसका जवाब युद्ध है?

**चंद्रशेखर की चेतावनी :** 13 दिसंबर 2001 को जब संसद पर आतंकी हमला हुआ था, तब भी युद्ध की बातें होने लगी थीं। लेकिन संसद में खड़े होकर पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने चेताया था कि 'लड़ाई ख़तरनाक खेल होती है।इससे सबका विनाश हो जाएगा।' बीजेपी सांसदों ने तब उनके भाषण के बीच काफी टोका-टाकी की थी, फिर भी उन्होंने कहा, ' अगर सरकार युद्ध का फ़ैसला करती है तो करे, लेकिन मैं अकेला होते हुए भी युद्ध का विरोध करता रहूँगा। चंद्रशेखर के भाषण को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चुपचाप सुना और इतिहास बताता है कि बात युद्ध तक नहीं पहुँची। चंद्रशेखर की चेतावनी को आज भी याद करने की ज़रूरत है। युद्ध कभी भी समाधान नहीं होता। यह तो आख़िरी विकल्प है, जब कोई रास्ता न बचे।

**महाभारत से आज तक: युद्ध की निरर्थकता :** महाभारत एक आदर्श उदाहरण है। पांडवों को इस महासमर में जीत तो मिली, लेकिन सब कुछ तबाह हो गया। सौ कौरव भाई ही नहीं, पाँचों पांडवों के पुत्र भी मारे गए और युधिष्ठिर के मन में केवल शून्यता बची। शांतिपर्व में कहा गया है-

"न युद्धात् परमं किंचिद् युद्धं सर्वं न संनादति।
युद्धेन संनादति सर्वं तस्माद् युद्धं परित्यजेत्।
**- महाभारत, शांतिपर्व (12.101.24)**

(युद्ध से बढ़कर कोई आपदा नहीं; युद्ध सब कुछ नष्ट कर देता है। इसलिए युद्ध का परित्याग करना चाहिए।)

आज जब भारत-पाक संबंधों में फिर तनाव है, तब ज़रूरत है संयम की, विवेक की। पाकिस्तान को सबक़ ज़रूर सिखाया जाना चाहिए, लेकिन वह सबक़ युद्ध नहीं, राजनय, अंतरराष्ट्रीय दबाव और विकास की प्रतिस्पर्धा से सिखाया जा सकता है। हमारी सभ्यता की परीक्षा तब होती है जब हम उकसावे में आए बिना, अपने मूल्यों को बनाए रखते हुए, टिके रहें। युद्ध नहीं, शांति ही असली शक्ति है।

## संपादकीय

# युद्ध के कगार पर

इसमें दो राय नहीं कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में चुन-चुनकर मारे गए 26 लोगों की मौत ने पूरे देश के अंतर्मन को झकझोरा है। साथ ही इस घटनाक्रम से उपजे आक्रोश ने सरकार पर आतंकियों व उनके आकाओं को सबक सिखाने का दबाब भी बनाया है। जिसके चलते दोनों देशों की तरफ से तल्ख बयानबाजी का जो दौर शुरू हुआ, वो थमने का नाम नहीं ले रहा है। जिसने दोनों देशों के संबंधों को निचले स्तर तक पहुंचा दिया है। जवाबी कार्रवाई के दबाव में स्थितियां खतरनाक स्थिति की तरफ बढ़ गई है। दोनों देशों की सीमाओं में तनाव तेजी से बढ़ रहा है। तीखी बयानबाजी के बीच सैन्य ताकत को बढ़ाने के दावे किए जा रहे हैं। लगातार चिंताजनक होती स्थिति के बीच संयुक्त राष्ट्र संघ की तरफ से बयान आया है। दोनों पक्षों को अधिकतम संयम बरतने की सलाह दी गई है। साथ ही कहा गया है कि तनाव का स्तर कम करने की कोशिश की जाए। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस का हस्तक्षेप और सुरक्षा परिषद के बंद कमरे में हुआ सलाह-मशविरा अंतर्राष्ट्रीय जगत की चिंता को ही रेखांकित करता है। निस्संदेह, संयुक्त राष्ट्र महासचिव की चेतावनी महज कूटनीतिक बयानबाजी नहीं है। निश्चित रूप से यह परमाणु हथियारों से लैस दो पड़ोसियों के बीच संघर्ष को टालने की महत्वपूर्ण कोशिश है। हालांकि, पाकिस्तान ने इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में ले जाकर भारत के खिलाफ माहौल बनाने का उपक्रम किया था। लेकिन वैश्विक मूड हस्तक्षेप के बजाय तनाव कम करने पर केंद्रित नजर आया। इसमें दो राय नहीं कि अब तक भारत की ओर संयमित प्रतिक्रिया ने स्थिति को और बिगड़ने से रोकने में मदद ही की है। हालांकि, दंडात्मक कार्रवाई के लिये देश के भीतर बढ़ती मांग ने दिल्ली पर सैन्य विकल्पों पर विचार करने का दबाव जरूर डाला है। हालांकि देश के दीर्घकालीन हितों के मद्देनजर कूटनीतिक प्रयासों से समस्या के समाधान की कोशिश की जानी चाहिए। लेकिन इस हकीकत को नजरअंदाज नहीं किया जाता कि आंतरिक दबाव के चलते यदि सैन्य विकल्पों को प्राथमिकता दी जाती है, तो कालांतर इससे क्षेत्र में व्यापक संघर्ष की शुरुआत हो सकती है। यह भी एक हकीकत है कि ऐसे मौके पर जब आतंकवादियों के क्रूर हमले में मारे गए लोगों के परिवार शोकाकुल हैं और जनता आक्रोशित है, संयम का आह्वान किसी को रास नहीं आएगा। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बड़े पैमाने पर संघर्ष को बढ़ावा देना कल्पना से अधिक तबाही ला सकता है। एक सैन्य टकराव न केवल इस उपमहाद्वीप को अपनी गिरफ्त में ले सकता है, बल्कि दशकों तक इस क्षेत्र को अस्थिर भी बनाये रख सकता है। विगत का अनुभव हमें याद कराता है कि भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले युद्ध से न केवल जन-धन की व्यापक क्षति होती है बल्कि साथ में कूटनीतिक अलगाव और आर्थिक झटके भी मिलते हैं। इन हालात में यह जरूरी है कि दोनों देश बैक चैनल के जरिये कूटनीतिक प्रयास करें तथा विश्वास निर्माण के उपायों के लिए फिर से प्रतिबद्धता दिखाएं। वैश्विक समुदायों, खासकर संयुक्त राष्ट्र और अमेरिका व चीन जैसे प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों को बयानों से आगे बढ़कर तनाव को बढ़ने से रोकने के लिये सक्रिय रूप से मध्यस्थता करनी चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि कश्मीर का सैन्य समाधान अतार्किक ही कहा जाएगा। एकमात्र वास्तविक समाधान निरंतर बातचीत में निहित है। दरअसल, आज अशांति के मूल कारणों को संबोधित करने की जरूरत है। पहली जरूरत इस बात की है कि शांति को नुकसान पहुंचाने वाले आतंकी नेटवर्क को नेस्तनाबूद किया जाए। इतिहास गवाह है कि युद्ध शांति का विकल्प कभी नहीं हो सकता। वहीं दूसरी ओर पड़ोसी कितना भी बुरा क्यों न हो भौगोलिक रूप से हम उसे बदल नहीं सकते। बुराई में अच्छाई की तलाश से स्थिति सामान्य बनाये रखने की कोशिश की जानी चाहिए। युद्ध की आकांक्षा रखने वाले लोगों को भी सोचना चाहिए कि कहीं न कहीं अंत में युद्ध की कीमत आम आदमी को ही प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से चुकानी पड़ती है।

# पोक पर कैसे किया पाकिस्तान ने क़ब्ज़ा?

**पंकज श्रीवास्तव**

पोक का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कहानी 19वीं सदी से शुरू होती है, जब 1846 की अमृतसर संधि के तहत महाराजा रणजीत सिंह के सिपहसालार रहे गुलाब सिंह ने 75 लाख नानकशाही सिक्कों के बदले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से जम्मू-कश्मीर रियासत खरीदी। इसमें जम्मू, कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, और बाल्टिस्तान शामिल थे। यह इतिहास का एक दुर्लभ उदाहरण था, जब एक राज्य बिना जनता की राय के खरीदा गया।पहले सिख-अंग्रेज़ युद्ध के बाद गुलाब सिंह ने पाला बदला था। 1947 में जब भारत आजाद हुआ, तब गुलाब सिंह के वंशज, महाराजा हरि सिंह, इस रियासत के शासक थे। हरि सिंह के सामने तीन विकल्प थेः भारत में शामिल होना, पाकिस्तान में जाना, या स्वतंत्र रहना। वे स्विट्जरलैंड जैसा स्वतंत्र देश बनाने का सपना देख रहे थे। लेकिन अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान समर्थित कबायली हमलावरों ने, सेना की मदद से, कश्मीर पर धावा बोल दिया। हरि सिंह की सेना असमर्थ थी। भारत से मदद माँगने पर जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल ने स्पष्ट किया कि पहले विलय पत्र पर हस्ताक्षर जरूरी हैं। 26 अक्टूबर 1947 को हरि सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए, और जम्मू-कश्मीर भारत का हिस्सा बना। इसके बाद शुरू हुआ भारत-पाक युद्ध, जो 1 जनवरी 1949 को संयुक्त राष्ट्र के युद्धविराम के साथ खत्म हुआ। नतीजा? जम्मू-कश्मीर का बंटवारा। पाकिस्तान ने 78,000 वर्ग किलोमीटर पर कब्जा रखा, जो आज ढङ्गड के रूप में जाना जाता है। यह क्षेत्र दो हिस्सों में बंटाः जम्मू और कश्मीर, जो 13,297 वर्ग किलोमीटर में फैला है, और गिलगित-बाल्टिस्तान, जो

72,871 वर्ग किलोमीटर में है। भारत इसे अवैध कब्जा मानता है, क्योंकि पूरा जम्मू-कश्मीर कानूनी तौर पर भारत में विलय हो चुका था।

पोक की वर्तमान स्थिति : पेक की प्रशासनिक स्थिति जटिल है। उसकी राजधानी मुजफ्फराबाद है और1974 के अंतरिम संविधान के तहत चलता है। यहाँ एक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, और 49 सीटों वाली विधानसभा है। कागजों पर यह अर्ध-स्वायत्त है, लेकिन वास्तव में सारी शक्ति इस्लामाबाद के पास है। गिलगित-बाल्टिस्तान, जिसे 2009 तक उत्तरी क्षेत्र कहा जाता था, और भी कम स्वायत्त है। यहाँ 33 सीटों वाली विधानसभा और एक मुख्यमंत्री हैं, लेकिन पाकिस्तान की सेना और नौकरशाही का दबदबा है। मानवाधिकार संगठन बोलने की आजादी और विरोध पर पाबंदियों की शिकायत करते हैं। स्थानीय लोग इसे 'आजाद' के बजाय 'गुलाम कश्मीर' कहते हैं। पोक की 60 लाख की आबादी है जिसमें 20 लाख गिलगित-बाल्टिस्तान में- हाल के वर्षों में आर्थिक उपेक्षा, बिजली की कमी, और मानवाधिकार हनन के खिलाफ प्रदर्शन बढ़े हैं। यूनाइटेड कश्मीर पीपल्स नेशनल पार्टी जैसे समूह अधिक स्वायत्तता या भारत में शामिल होने की माँग करते हैं, क्योंकि वे भारत के जम्मू-कश्मीर को फलता-फूलता देखते हैं। लेकिन सभी भारत के पक्ष में नहीं हैं-कुछ स्वतंत्रता चाहते हैं, तो कुछ पाकिस्तान के प्रति वफादार हैं।

**भारत का रुख स्पष्ट है :** पोकभारत का अभिन्न हिस्सा है, जिस पर पाकिस्तान का अवैध कब्जा है। 22 फरवरी 1994 को संसद ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर पाकिस्तान से ढङ्गड और अक्साई चिन खाली करने की माँग की। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में 24 सीटें और लोकसभा में 7 सीटें ढङ्गड के लिए आरक्षित हैं, जो भारत के संकल्प का प्रतीक हैं।

**एकीकरण की संभावनाएं :** पोक को भारत में शामिल करना आसान नहीं। तीन रास्ते संभव हैं। पहला, कूटनीति-भारत संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर दबाव डाल सकता है, लेकिन चीन, जो गिलगित-बाल्टिस्तान से चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा चला रहा है, इसे जटिल बनाता है। दूसरा, सैन्य कार्रवाई-भारत की सेना सक्षम है, लेकिन युद्ध जोखिम भरा है, खासकर परमाणु हथियारों की मौजूदगी में। तीसरा, स्थानीय विद्रोह-ढङ्गड में असंतोष बढ़ रहा है, और भारत इसे समर्थन दे सकता है, लेकिन पाकिस्तान इसका विरोध करेगा। कूटनीति सबसे व्यवहारिक रास्ता है, जिसमें भारत जम्मू-कश्मीर के विकास को प्रदर्शित कर ढङ्गड के लोगों का दिल जीत सकता है। पाक अधिकृत कश्मीर न केवल एक भू-राजनीतिक चुनौती है, बल्कि उन 60 लाख लोगों की जमीन भी है जो शांति और प्रगति चाहते हैं। 1947 का बंटवारा और भारत का अटल संकल्प इसे विभाजन और उम्मीद का प्रतीक बनाते हैं। युद्ध अंतिम रास्ता है, लेकिन कूटनीति और विकास के जरिए भारत पोक के लोगों का विश्वास जीत सकता है। यह राह लंबी और कठिन है, लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति से असंभव कुछ भी नहीं। पोक का भविष्य भारत और पाकिस्तान के फैसलों पर टिका है, और इसमें शांति की जीत ही सबसे बड़ी उम्मीद है।

# रीढ़विहीन अफसरशाही: सिद्धरमैया से लेकर कांवड़ यात्री का पैर धोने वाले अधिकारी तक

**एन.के. सिंह**

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने एक सार्वजानिक-सभा में भाषण दे रहे थे. बीच में अचानक भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता नारे लगाने लगे. यह बात राज्य के इस सबसे बड़े जन-प्रतिनिधि को इतनी नागवार गुज़री कि तत्काल आदेश दिया कि जो भी वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौजूद हैं, फ़ौरन मंच पर आयें. सुरक्षा के लिए तैनात एक एसीपी पूरी संजीदगी के साथ मंच पर आ कर सीएम साहेब को सैल्यूट किया लेकिन सैल्यूट का जबाव सीएम ने अपना दाहिना हाथ खींच कर थप्पड़ मारने के भाव से दिया। अधिकारी को प्रशासनिक सेवा की ट्रेनिंग में कानून-व्यवस्था के इस अध्याय से परिचित नहीं कराया गया था लिहाज़ा थोडा पीछे हुआ. मुख्यमंत्री की भावभंगिमा के प्रतिकार की आशंका से उनका सिक्यूरिटी अफसर अचानक बगल में आया तब इस "जननेता" को अहसास हुआ कि कैमरा लगा है और हजारों की भीड़ उनके उग्र भाव को देख रही है. हाथ पीछे आया. लेकिन लौटने के बाद मुख्यमंत्री उस अधिकारी की "अक्षमता" पर क्या प्रतिक्रिया देंगे यह अभी पता नहीं चला है। स्थाई कार्यपालिका की नियति में हीं इसकी दुर्गति है. जरा सोचें. इस वर्ग से (जिसे ब्रिटिश काल में आईसीएस) कहा जाता था, सन 1922 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री जॉर्ज लोयेड इनकी "क्षमता" से इतने खुश थे कि ब्रिटिश संसद में बोलते हुए इन्हें "स्टीलफ्रेम" की संज्ञा से नवाजा. यह वह काल था जब गांधी अंग्रेजों के खिलाफ जनाक्रोश सडकों पर लाने में अद्भुद रूप से सफल हो रहे थे. याने शोषणकारी औपनिवेशिक व्यवस्था में भी "आकाओं" को खुश करना इनकी भी मौलिक फितरत हो चुकी थी। भारतीय आईसीएस का एक बड़ा वर्ग भी आजादी की लड़ाई को दबाने में उसी

शिद्दत से लगा था. आजादी की औपचारिक घोषणा के पूर्व की अंतरिम सरकार में नेहरु इन आईसीएस अधिकारियों से छुटकारा चाहते थे. संविधानसभा में भी इनके खिलाफ माहौल था. लेकिन पटेल इस छोटे से काल इनकी साथ काम करने का अनुभव संविधानसभा में साझा करते हुए कहा "जिन यंत्रों के साथ काम करना हो उन्हें बिगाड़ते नहीं हैं". जाहिर है उनको भी उतना भरोसा नहीं था। लेकिन ढाई साल इनके साथ काम करने के बाद पटेल ने एक सवाल के जवाब में उसी सभा में 10 अक्टूबर, 1949 को कहा, "मैं पिछले कुछ समय से इनके साथ काम कर रहा हूँ. मैं अपने अनुभव के आधार पर पूरी संजीदगी से कह सकता हूँ कि "लॉयल्टी" की बात हो या "देशभक्ति" की, या फिर जिम्मेदारी की, यह अधिकारी वर्ग हम राजनीतिक लोगों से कहीं कम नहीं हैं. सच पूछिए तो इन तीन वर्षों में मैंने पाया कि इनका विकल्प नहीं है और अगर इन्होने निष्ठा और प्रतिबद्धता से काम न किया होता तो यह यूनियन ढह चुका होता। पटेल के कार्यकाल में हीं आल इंडिया सर्विस की अवधारणा के तहत आइएएस और आईपीस कैडर्स तैयार किया गया. इन सेवा में तीसरा वर्ग है इंडियन फारेस्ट सर्विस का. बाकि सारी सेवाएं यहाँ तक कि इंडियन फॉरेन सर्विस (आईएफएस) भी सेंट्रल सर्विसेज में आती हैं। हमने इमरजेंसी में भी इन अफसरों की भूमिका देखी जो सत्ता में बैठे आकाओं के लिए सब कुछ करने को तत्पर रहे. मोदी ने सन 2014 में सत्ता हासिल की तो पहला काम किया अपने राजनीतिक सहयोगियों याने सीनियर मंत्रियों तक को किनारे कर अफसरशाही का सहारा लेना. आज पीएमओ में बैठे चंद अधिकारियों की दहशत से बड़े से बड़ा भाजपा सीएम भी घबराता है।

**लोयड से पटेल से मोदी तक :** अगर किसी संस्था की तारीफ औपनिवेशिक शासन के ब्रिटिश पीम से लेकर आजाद नए भारत का एचएम करे तो इससे एक बात तो साफ़ है। अफसरों को "अक्काओं" के हुक्म बजा लाने में महारथ हासिल है. ईडी से लेकर आईटी तक और सीबीआई से लेकर थाने के दरोगा तक अपनी रीढ़ गिरवी रख चुके हैं किसी नेता के घर ताकि पोस्टिंग अच्छे मिले और ट्रान्सफर मन माफिक हो. । कर्नाटक की उपरोक्त छोटी सी घटना बताती है कि देश के प्रशासनिक ढांचे को शक्ति-असंतुलन के दीमक ने कितना खोखला कर दिया है. लेकिन इसमें एक पक्ष झराजनीतिक कार्यपालिका झ हीं दोषी नहीं है. इन आकाओं को खुश करने के लिए ये अधिकारी बुलडोजर से गिरे मकान और आर्तनाद करती महिलाओं-बच्चों की फोटो अपने सीएम के साइट पर अपलोड करते हैं. बच्चों को स्कूल में मिड-डे मील में चावल और नमक खिलाये जाने की फोटो और खबर प्रकाशित करने वाले पत्रकार को यही अफसर सत्तादल को खुश करने के लिए संगीन दफाओं में महीनों जेल में रखते हैं। अफसरों को ज्वाइन करने के समय संविधान और कानून के अनुरूप काम करने की शपथ लेनी होती है लेकिन 75 सालों में अच्छी पोस्टिंग का लालच और ट्रान्सफर का डर इनकी नैतिक रीढ़ तोड़ चुका है. नतीजतन उत्तर प्रदेश में एक एसपी मीडिया बुलाकर एक कांवड़ यात्री के पैर धोता है और विडियो को सीएम ऑफिस को भेज देता है. होड़ में एक डीएसपी होली पर मुसलमानों को आदेश देता है कि रंग से ऐतराज है तो घर में बैठें लेकिन उस राज्य का सीएम ईद के अवसर ऐलान करता है कि सड़क नमाज पढ़ने की जगह नहीं है. अगले दिन एसपी/डीएसपी को शाबासी मिलती है. तो थप्पड़ को जलालत क्यों मानें ?

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

## संक्षिप्त समाचार

### पंचतत्व में विलीन हुए पूर्व जदयू जिलाध्यक्ष बटेश्वर सिंह, जदयू जिलाध्यक्ष नचिकेता मंडल ने पार्टी का झंडा ओढ़ाया



**दिव्य दिनकर पवन कुमार चौधरी**

मुंगेर। जनता दल यूनाइटेड के मुंगेर जिला के पूर्व अध्यक्ष रहे वर्तमान जदयू प्रदेश सलाहकार समिति सदस्य बटेश्वर सिंह को अंतिम विदाई दी गई। जदयू नेता बटेश्वर सिंह को पार्टी की ओर से राजकीय सम्मान दिया गया। वर्तमान जदयू जिला अध्यक्ष नचिकेता मंडल, जिला प्रवक्ता विमलवेंदु राय, जदयू के प्रदेश सलाहकार समिति सदस्य मनोरंजन मजूमदार, पूर्व जिलाध्यक्ष संतोष साहनी, पूर्व जिलाध्यक्ष जिया उर रहमान, जदयू प्रखंड अध्यक्ष मुनि लाल मंडल, जदयू अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष मिथलेश मंडल की मौजूदगी में दिवंगत पूर्व जिला अध्यक्ष के आर्थिक शरीर पर पार्टी का झंडा देकर सम्मान दिया। दिवंगत जदयू नेता बटेश्वर सिंह के दामाद सह सामाजिक कार्यकर्ता विवेक श्रीवास्तव की मौजूदगी में जमालपुर के केशोपुर गुरुद्वारा रोड स्थित उनके निजी आवास से फूल और माला से शव-वाहन को सुसज्जित कर शवयात्रा निकाली गई। जदयू नेता बटेश्वर सिंह की अंतिम यात्रा में शिवम कुमार, पप्पू मंडल, प्रोफेसर राजीव नयन, विरंजन मंडल, पूर्व वार्ड पार्षद गौतम आजाद, बालकृष्ण, प्रदीप विश्वकर्मा, वार्ड संख्या - 25 के जदयू वार्ड अध्यक्ष अशोक कुमार शामिल रहे।

#### राजद के पूर्व सांसद सह पूर्व विधायक ने दी श्रद्धांजलि

जदयू के पूर्व जिला अध्यक्ष बटेश्वर सिंह के निधन पर विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों के नेताओं ने उनके आवास पर पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की। कई नेताओं ने राजनीतिक भेदभाव से परे हटकर एक स्वस्थ और समरसता पूर्ण राजनीति का परिचय देते हुए जदयू नेता बटेश्वर सिंह के शव यात्रा में भी हिस्सा लिया। किसी कड़ी में आदर्श राजनीति का परिचय देते हुए दिवंगत पूर्व जदयू नेता बटेश्वर सिंह के राजनीतिक सफर में समकालीन रहे मुंगेर के पूर्व सांसद सह पूर्व विधायक विजय कुमार विजय ने उनके आवास पर पहुंचकर न सिर्फ श्रद्धांजलि दी बल्कि उनके अंतिम यात्रा में शवदाह गृह में अंतिम संस्कार तक शामिल रहे।

#### कम्युनिस्ट पार्टी से जदयू तक का रहा शानदार सफर

कम्युनिस्ट पार्टी से अपनी राजनीति की शुरूआत करने वाले प्रदेश जदयू सलाहकार समिति के सदस्य सह जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष बटेश्वर सिंह का राजनीतिक सफर काफी शानदार रहा। उन्होंने समाज सेवा की भावना से राजनीति में कदम रखा। आरंभिक काल में कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय सदस्य की भूमिका में राजनीति के गुर सीखे। इसी कड़ी में समता पार्टी के गठन के दौरान नीतीश कुमार और जॉर्ज फर्नांडिस के काफी करीब होने के कारण पार्टी के संस्थापक सदस्य भी बने। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, जॉर्ज फर्नांडिस, शरद यादव, दिग्विजय सिंह सरीखे नेताओं से निकटता होने के कारण जनता दल यूनाइटेड के गठन के बाद पार्टी में एक सक्रिय भूमिका में अपना योगदान दिया। 71 वर्षीय दिवंगत जदयू नेता बटेश्वर प्रसाद सिंह ने अपने जीवित काल में दो बार पार्टी के जिलाध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी संभाली।

### डीपीआरओ ने नरोत्तमपुर पंचायत भवन का किया निरीक्षण

**रिपोर्ट- अविनाश मंडल**

पाकुड़ःपाकुड़ जिला पंचायत राज पदाधिकारी प्रीतिलता मुर्मू ने पाकुड़ प्रखंड अंतर्गत नरोत्तमपुर पंचायत भवन का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान वॉटर प्यूरीफायर, भस्मक एवं ज्ञान केन्द्र का जायजा लिया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। ज्ञान केन्द्र के सफल संचालन हेतु निर्देशित किया। मौके पर मुखिया, पंचायत सचिव एवं रोजगार सेवक, मोबिलाइजर, स्वंय सेवक उपस्थित थे।

### मांडर, स्कूल रुआर 2025 कार्यक्रम को लेकर मांडर में निकला जागरूकता रथ

**मांडर,** रूआर कार्यक्रम 2025 बैक टू स्कूल कैंपेन के तहत विद्यालय में नामांकन एवं ठहराव को लेकर मंगलवार को प्रखंड मुख्यालय से जागरूकता रथ रवाना किया गया. रथ को बीपीओ गुलाम सरवर ने झंडी दिखाकर रवाना किया. उन्होंने बताया कि यह रथ मांडर प्रखंड के 19 पंचायत के सभी स्कूलों के पोषक क्षेत्र में जाकर जागरूकता फैलाने का काम करेगा साथ ही रथ के माध्यम से सभी जगह हैंड बिल का वितरण, पोस्टर लगाने का काम एवं गीत के माध्यम से विद्यालय से बाहर रह रहे बच्चों को जागरूक किया जाएगा. मौके पर कांति तिर्की, रंजीत कुमार, जयंत कुमार लकड़ा, विनोद कुमार, स्मिता सिंह, मो मुजम्मिल के अलावा विभिन्न स्कूलों के शिक्षक व छात्र उपस्थित थे.

# राष्ट्रीय लोक अदालत सुलहनीय वादों के निस्तारण का है सशक्त माध्यम, और इसे जन-जन तक पहुँचाने में सभी प्रकार के मीडिया की भूमिका अहम- जिला जज

## राष्ट्रीय लोक अदालत के आयोजन को लेकर जिला जज द्वारा किया गया प्रेस कॉन्फ्रेंस

**रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह**

औरंगाबाद :- प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार श्री राज कुमार द्वारा जिला के विभिन्न समाचार पत्रो, प्रिट मिडिया, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के साथ जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सभागार में एक प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसमें दिनांक 10.05.2025 को आयोजित होने वाले इस वर्ष का द्वितीय राष्ट्रीय लोक अदालत के सम्बन्ध में प्राधिकार के द्वारा किये किये गये कार्यो के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी विभिन्न संवाददाताओं को उपलब्ध कराया गया। जिला जज ने बताया कि 10 मई, 2025 को इस वर्ष का दूसरा तथा हमारे कार्यकाल का चैथा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन होना है जिसके लिए न्यायालयों से सम्बन्धित सुलहनीय वादों में अबतक की गयी कार्रवाई का विस्तृत ब्यौरा सभी संवाददाताओं को उपलब्ध कराया गया। जिला जज द्वारा बताया कि दिनांक 10.05.2025 को आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए न्यायालय में लम्बित सभी तरह के सुलहनीय वादों से सम्बन्धित नोटिस को पुलिस के माध्यम से पक्षकार को हस्तगत कराया गया है साथ ही तामिला प्रतिवेदन पर प्राप्त मोबाईल संख्या के आधार पर कार्यालय द्वारा उन्हें राष्ट्रीय लोक अदालत के दिन उपस्थित रहने हेतु भी सूचित किया गया है। जिला जज द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा पूर्ववर्ती आयोजित सभी राष्ट्रीय लोक अदालत से सम्बन्धित विविध गतिविधियों में बृहत प्रचार-प्रसार में सभी पत्रकारो का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्ति पर आभार व्यक्त किया गया। साथ ही साथ 10 मई 2025 को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत में सभी का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है और आगे भी होता रहेगा, ऐसा सभी संवाददाताओं से अपेक्षा की गयी है। जिला जज द्वारा सभी विभागों द्वारा अपने विभाग अन्तर्गत लम्बित सुलहनीय वादों की सूची उपलब्ध कराने हेतु दिये गये निर्देश से संवाददाताओं को अवगत कराया गया। जिला जज ने बताया कि सभी सम्बन्धित विभागों, न्यायालय तथा सम्बन्धित पदाधिकारियों के साथ कई दौर की बैठक का आयोजन किया गया है। मीडिया द्वारा किये जाने वाले सार्थक सहयोग के प्रतिफल के रूप में राष्ट्रीय लोक अदालत के दिन इसका साकारात्मक परिणाम मिलने की संभावना है। प्रेस कान्फ्रेस में प्रधान जिला एवं सत्र.न्यायाधीश द्वारा संवाददाताओं को बताया कि पारिवारिक मामलों के निस्तारण में इस जिला पूर्व में भी अच्छा रहा है और इसे और अब्बल बनाने की प्रक्रिया जारी रहेगी और इसके लिए कई वादों का चयन किया गया है। वादों के सम्बन्ध में प्राधिकार के सचिव तान्या पटेल ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रारम्भिक स्तर पर



अभी तक 2230 सुलहनीय वाद जो न्यायालय में लम्बित है चिन्हित किया गया है तथा 51 वादों में निस्तारण हेतु सहमति प्रदान किये जाने तथा 5000 से अधिक नोटिस निर्गत किये जाने तथा तथा 600 वादों का निस्तारण का लक्ष्य से सम्बन्धित ब्यौरा संवाददाताओं का उपलब्ध कराया गया। साथ ही प्री-लिटिगेशन के अन्तर्गत 5000 से अधिक बैंक ऋण सम्बन्धी मामलों में पक्षकारों को नोटिस किया गया है जिसमें 125 से अधिक ऋण वादों का निस्तारण हेतु सहमति प्राप्त हो गया है तथा 1200 से अधिक मामलो को इस लोक अदालत में निस्तारण का लक्ष्य रखा गया है और इनसे सम्बन्धित नोटिस प्रेषण की कार्रवाई की जा चुकी है, जिसे आगे बढ़ने की संभावना है। साथ ही साथ प्रेस वार्ता के समय बताया गया कि न्यायालय स्तर से बड़े पैमाने पर नोटिस प्रेषित करने की कार्रवाई की गयी है जिससे कि न्यायालय में लम्बित सभी तरह के सुलहनीय मामलों का अधिक से अधिक निस्तारण संभव हो सकेगा। संवाददाता सम्मेलन में उपस्थित , प्रधान न्यायाधीश एवं सचिव द्वारा जिले वासियों से संयुक्त रूप से आह्वान किया गया कि इस राष्ट्रीय लोक अदालत का ज्यादा-से ज्यादा लाभ उठायें, इस अवसर पर सभी संवाददाताओं ने राष्ट्रीय लोक अदालत के वृहत प्रचार-ह्लप्रसार में अपनी भूमिका को पुरी तरह से निर्वह्व करने का भरोसा दिया गया और कहा गया कि पूर्व में भी हमलोगो का सहयोग मिला है और यह निरंतर जारी रहेगा। सचिव ने राष्ट्रीय लोक अदालत में त्वरित निस्तारण हेतु गठित बेंच के बारे में जानकारी देते संवाददाताओं को बताया कि औरंगाबाद जिला एवं अनुमण्डलीय न्यायालय, दाउदनगर को मिलाकर कुल 09 बेंचों का गठन किया गया है जिसमें वादों का त्वरित निष्पादन किया जायेगा। सचिव ने बताया कि औरंगाबाद व्यवहार न्यायालय में राष्ट्रीय लोक में वादों के निष्पादन हेतु बेंच संख्या 01 मोटर दुर्घटना वाद, ईजराय वाद, भरण-पोषण वाद तथा पारिवारिक मामलें, बेंच संख्या 2 पर अपर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी, प्रथम एवं तृतीय के न्यायालय से सम्बन्धित सुलहनीय वाद तथा एनआई अधिनियम से सम्बन्धित मामलें, बेंच संख्या 3 पर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी के न्यायालय से सम्बन्धित सुलहनीय वाद तथा खनिज, वन, श्रम एवं बिजली इत्यादि से सम्बन्धित वाद, बेंच संख्या 4 पर अपर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी, चतुर्थ षष्टम एवं सप्तम के न्यायालय से सम्बन्धित सुलहनीय वाद बेंच संख्या 05 पर औरंगाबाद जिला के सभी बैंक से सम्बन्धित ऋण वाद। बेंच संख्या 06 में राजीव कुमार न्यायिक दण्डाधिकारी के न्यायालय, प्रथम श्रेणी के न्यायालय, अनुमण्डलीय न्यायिक दण्डाधिकारी के न्यायालय श्री ओम प्रकाश नारायण सिंह,, न्यायिक दण्डाधिकारी, प्रथम श्रेणी श्रीमती नेहा दयाल के न्यायालय से सम्बन्धित सूलहनीय वाद जिनका न्यायालय अभी खाली है, बेंच संख्या 07 में श्री शुभान्कर शुक्ला के न्यायालय से सम्बन्धित मामलें श्रीमती नेहा , न्यायिक दण्डाधिकारी, प्रथम श्रेणी श्री विकास कुमार, न्यायिक दण्डाधिकारी, प्रथम श्रेणी जिनका न्यायालय अभी खाली है के न्यायालय से सम्बन्धित सुलहनीय वाद का निस्तारण किया जायेगा। बेंच संख्या 08 अनुमण्डलीय न्यायालय, दाउदनगर से सम्बन्धित है जिसपर अनुमण्डलीय न्यायालय, दाउदनगर के लिए गठित बेंच के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि बेंच संख्या 08 पर अनुमण्डलीय न्यायिक दण्डाधिकारी, दाउदनगर एवं द0प्र0सं0 की धारा 107 एवं 144 से सम्बन्धित वाद का निस्तारण किया जायेगा। बेंच संख्या 09 पर श्री आशिष कुमार एवं श्वेताभ शाण्डील्य न्यायिक दण्डाधिकारी के न्यायालय से सम्बन्धित सुलहनीय आपराधिक वाद का निस्तारण किया जायेगा। सचिव द्वारा जिला वासियों से यह अपील भी किया गया कि राष्ट्रीय लोक अदालत का अधिक से अधिक फायदा उठायें और राष्ट्रीय लोक अदालत के दिन आकर अपने वादों को निस्तारण कराने में विशेष रूचि लें

और राष्ट्रीय लोक अदालत का फायदा जिलावासियों को अधिक से अधिक लोगो को मिले इसके लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकार तत्पर है। सचिव द्वारा यह भी बताया कि बेंच से सम्बन्धित विस्तृत विवरणी जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सूचना-पट्ट पर चशपा कराया गया है जिससे कि न्यायालय आने वाले लोगो को बेंच से सम्बन्धित सूचना प्राप्त करने में सुविधा हो।

# Action TESA ने टेसा सलाम' के साथ मनाया कारपेंटर्स मेगा मीट

**देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा**

एक्शन-टेसा, जो भारत में MDF/HDHMR/Boilo और पार्टिकल बोर्ड जैसे इंजीनियर्ड पैनल उत्पादों का सबसे बड़ा निमार्ता और लकड़ी पैनल उद्योग में अग्रणी है, ने देशव्यापी उत्सवों की एक श्रृंखला के साथ गर्व से मेगा कारपेंटर्स मीट का आयोजन देवघर के होटल वायोरे इन मे किया। मीटिंग में मनोज उपाध्याय डीजीएम , आनन्द प्रभात बीएम, आदित्य रंजन बीडीएम तथा समस्त बिहार और झारखंड टीम ने सभी कारपेंटर्स भाईयों का स्वागत किया। आनन्द जी ने कहा कि यह आयोजन उन कारपेंटर्स के अमूल्य योगदान को मान्यता देने के लिए समर्पित है, जिनकी कारीगरी देश भर के




अनगिनत घरों और व्यवसायों में सुंदरता और कार्यक्षमता लाती है। इस मेगामीट कार्यक्रम के आयोजन के माध्यम से, Action TESA TESA ने इस कार्यक्रम मे उपस्थित कारपेंटर्स की कारीगरी को मान्यता देने के साथ-साथ उन्हें उभरती तकनीकों और नवाचारी डिजाइन तकनीकों के बारे में जानने का एक मंच प्रदान किया। यह पहल Action TESA के ब्रांड दर्शन KOI NAHI AISA के अनुरूप है, जो अतुलनीय गुणवत्ता और उत्कृष्टता पर जोर देता है। पिछले एक दशक से, कंपनी इन मीट्स के माध्यम से कारपेंटर्स के साथ निकटता से काम कर रही है, उन्हें मूल्यवान जानकारी और प्रशिक्षण प्रदान कर रही है, जिससे ब्रांड और लकड़ी के कामकाज उद्योग के साथ उनका संबंध और भी मजबूत हो रहा है। अूङ्घ्रल्ल ळएरअ के प्रबंध निदेशक, अजय अग्रवाल ने इस अवसर पर विडियो मैसेज के द्वारा कारपेंटर्स के प्रति अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा, कि कारपेंटर्स इंजीनियर्ड लकड़ी उद्योग की रीढ़ हैं, और उनकी कुशलता और रचनात्मकता के प्रति आभार प्रकट किया। 'टेसा-सलाम' का अर्थ सम्मान की अभिव्यक्ति है, टेसा सलाम' पहल का उद्देश्य कारपेंटर्स की स्थिति को ऊंचा उठाना और उनके कठिन परिश्रम और कारीगरी को पहचान दिलाना है, जिससे उद्योग में उनकी भूमिका और अधिक स्पष्ट और मूल्यवान हो सके।

## भारतीय सेना का प्राक्रम अद्भुत:ध्रुव

**देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा**

देवघर.आज आजसू पार्टी केन्द्रीय सचिव ध्रुव प्रसाद साह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि भारतीय सेना को ऑपरेशन सिंदूर झ्र हर सिन्दूर की रक्षा का संकल्प को सफलतापूर्वक पूरा करने का पूरा श्रेय जाता है` ये सिर्फ एक सैन्य अभियान नहीं था बल्कि ये हर उस माँ, बहन और पत्नी के सिन्दूर की रक्षा का प्रण था` ₹ऑपरेशन सिंदूर₹ हमारे सैनिकों के साहस, समर्पण और बलिदान की वह गाथा है, जो हर भारतीय के हृदय में गर्व की अग्नि जलाती है` जिस मिट्टी ने हमें जन्म दिया, उसी की रक्षा के लिए जब दुश्मन की हर चाल को नाकाम करना पड़ा, तो हमारे जाँबाज जवानों ने न सिर्फ जवाब दिया, बल्कि इतिहास रच दिया` पहलगाम में 26 भारतीयों की नृशंस हत्या के 15 वे दिन हुई इस कार्रवाई में पाकिस्तान के साथ दुनिया को एक बार पुनः यह संदेश दे दिया है कि भारत ना भूलता है, ना माफ करता है और ना बहुत देर इंतजार करता है` इस सफल ऑपरेशन को पूरा करने के लिए भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी को श्रेय जाता है क्योंकि उनकी निगरानी में ही यह ऑपरेशन सफलतापूर्वक हो पाया` ऑपरेशन को लेकर एनएसए अजीत डोभाल और अन्य राजनीतिक कोर टीम के सदस्य लगातार संपर्क में थे` पुरा देश इस जीत से बहुत खुशी महसूस कर रही है`

# समस्तीपुर में बैंक ऑफ महाराष्ट्र से करोड़ों की लूट, हथियारबंद बदमाश फरार

**समस्तीपुर:** बिहार के समस्तीपुर जिले में बैंक लूट की एक बड़ी और चौंकाने वाली वारदात सामने आई है। अपराधियों ने बुधवार की सुबह नगर थाना क्षेत्र के काशीपुर इलाके में स्थित बैंक ऑफ महाराष्ट्र की शाखा को निशाना बनाया। इस वारदात में बदमाशों ने लगभग 5 करोड़ रुपये के सोने और करीब 15 लाख रुपये नगद पर हाथ साफ कर दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, अपराधियों ने ग्राहक बनकर बैंक में प्रवेश किया और फिर हथियारों के बल पर कर्मियों और मौजूद ग्राहकों को बंधक बना लिया। बैंक खुलने का समय होने के कारण उस समय बैंक में बहुत अधिक भीड़ नहीं थी, जिससे बदमाशों को वारदात को अंजाम देने में आसानी हुई। सूत्रों के अनुसार, लूटपाट करीब 40 मिनट तक चली। इस दौरान बदमाशों ने पूरे बैंक को कब्जे में लेकर योजनाबद्ध तरीके से लूट को अंजाम दिया। पहले कुछ बदमाश खाता खुलवाने के बहाने बैंक में दाखिल हुए और दस्तावेजों के बारे में पूछताछ की, फिर बाकी साथी अंदर घुसे और सभी ने मिलकर पूरी घटना को अंजाम दिया। बताया जा रहा है कि लुटेरों की संख्या 8 से 10 के बीच थी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस हरकत में आ गई। समस्तीपुर सदर डीएसपी संजय पांडे मौके पर पहुंचे और जांच में जुट गए। इलाके में तलाशी अभियान चलाया जा रहा है और सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है ताकि आरोपियों की पहचान हो सके और उन्हें जल्द पकड़ा जा सके।

# बिहार: जल-जीवन-हरियाली अभियान बना पर्यावरण संरक्षण की मिसाल, 4 करोड़ से ज्यादा पौधे लगे



**पटना:** बिहार सरकार की ओर से जल संरक्षण, पर्यावरण संतुलन और कृषि विकास को लेकर चलाया जा रहा ह्लजल-जीवन-हरियालीह्व अभियान राज्य में हरियाली और जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए एक मजबूत पहल साबित हो रहा है। इस अभियान की शुरूआत मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 2 अक्टूबर 2019 को की थी। इसका मुख्य उद्देश्य जल संसाधनों का संवर्धन, पर्यावरण को हरा-भरा बनाना और कृषि को बढ़ावा देना है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में इस अभियान को और मजबूती देने के लिए योजना एवं विकास विभाग द्वारा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग को 528.87 करोड़ रुपये की राशि प्रदान की गई है। इसमें से 462.87 करोड़ रुपये की राशि राज्य योजनाओं पर खर्च की जाएगी, जबकि शेष राशि केंद्र और राज्य हिस्से की केंद्रीय योजनाओं के लिए रखी गई है। पिछले वर्ष 2024-25 में भी विभाग को 517.28 करोड़ रुपये का बजट मिला था, जिससे ह्यहर खेत सिंचाई का पानीह्ण, वृक्षारोपण, मृदा संरक्षण और गारलैंड ट्रेंच जैसी योजनाएं चलाई गईं। जल जीवन हरियाली अभियान के अंतर्गत विभाग के द्वारा वन एवं वन से बाहर भूमि पर व्यापक पैमाने पर वृक्षारोपण कराया जा रहा है। इसी दौरान मुख्यमंत्री निजी पौधशाला और कृषि वानिकी जैसी योजनाओं के जरिए बड़े पैमाने पर पौधारोपण हुआ। वर्तमान में चतुर्थ कृषि रोड मैप (2023-28) के तहत 20 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य है। वर्ष 2024-25 में 4.68 करोड़ पौधारोपण का लक्ष्य रखा गया था,

# बेगूसराय: सरकारी आवास में नाबालिग के साथ यौन शोषण, आरोपी चपरासी गिरफ्तार

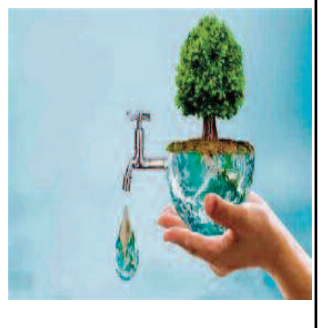




**बेगूसराय** जिले से एक बेहद चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहां नगर थाना क्षेत्र स्थित जल संसाधन विभाग (ढल्लएऊ) के सरकारी आवास में कार्यरत एक चपरासी द्वारा नाबालिग लड़के के साथ कुकर्म करने का मामला सामने आया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। घटना की सूचना मिलते ही नगर थाना की पुलिस टीम और सशस्त्र बल मौके पर पहुंचे। जांच के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि आरोपी चपरासी अब्दुल मजिद, जो ढल्लएऊ में कार्यरत है, ने नाबालिग को बहला-फुसलाकर अपने सरकारी क्वार्टर में ले जाकर अमानवीय कृत्य किया। पुलिस ने घटनास्थल की गहन जांच करवाई और ऋ§छ (फॉरेंसिक) टीम को भी मौके पर बुलाया गया। इसके साथ ही पीड़ित बच्चे और आरोपी दोनों का मेडिकल परीक्षण सदर अस्पताल, बेगूसराय में कराया गया। पीड़ित की ओर से दर्ज शिकायत के आधार पर नगर थाना कांड संख्या 181/25 के तहत मामला दर्ज किया गया है। इस मामले में भारतीय न्याय संहिता की धाराएं 75(2), 127(2), 115(2), 198, 199 बीएनएस और पॉक्सो एक्ट की धारा 4/6 लगाई गई हैं। गिरफ्तार आरोपी की पहचान 52 वर्षीय अब्दुल मजिद के रूप में हुई है, जो मूल रूप से फुलवारी शरीफ, पटना का निवासी है और वर्तमान में ढल्लएऊके सरकारी आवास, बेगूसराय में कार्यरत था।

## संक्षिप्त समाचार

### सदर अस्पताल में विशेषज्ञ व अति विशेषज्ञ के चिकित्सकों के ओपीडी का सिविल सर्जन ने किया उद्घाटन

**देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा**

देवघर.आज सदर अस्पताल में विशेषज्ञ/अति विशेषज्ञ चिकित्सकों के ओ पी डी का उदघाटन संयुक्त रूप से जिले के सिविल सर्जन डॉ जुगल किशोर चौधरी एवं उपाधीक्षक सदर अस्पताल देवघर डॉ प्रभात रंजन के द्वारा किया गया।ज्ञात हो कि विभागीय माननीय मंत्री एवं अपर मुख्य सचिव के निर्देश पर सभी जिला अस्पतालों में विशेषज्ञ और अति विशेषज्ञ चिकित्सकों को आयुष्मान भारत ,मुख्यमंत्री मंत्री जन आरोग्य योजना के तहद उपार्जित राशि से भुगतान करते हुए उनकी सेवा बहाल करनी है।इस निर्देश के आलोक में सिविल सर्जन देवघर द्वारा त्वरित पहल किया गया और पांच विशेषज्ञ एवं अति विशेषज्ञ चिकित्सकों से बात कर सप्ताह में एक दिन सदर अस्पताल के ओ पी डी में उनकी सेवा ली जाएगी।जिन चिकित्सकों द्वारा उनकी सेवा दी जानी है उनका रोस्टर निम्न है 1 डॉ अभिनव कुमार ,नेफ्रोलॉजी( किडनी की बीमारियों से संबंधित इलाज )प्रत्येक सोमवार को अपनी सेवा देंगे। 2 डॉ बिपिन सिन्हा,कार्डियोलॉजी( हृदय रोग से संबंधित इलाज )प्रत्येक मंगलवार 3 डॉ शिवांगी,न्यूरोलॉजी( नस रोग से संबंधित इलाज )प्रत्येक बुधवार 4 डॉ मृगांक कुमार सिंह,यूरोलॉजी( गुर्दे,मूत्राशय, प्रोस्टेट से सम्बन्धित इलाज )प्रत्येक गुरुवार 5 डॉ ब्रजेश कुमार,न्यूरोसर्जन( नस से सम्बन्धित शल्य चिकित्सा )प्रत्येक शनिवार इन पांच चिकित्सकों में तीन चिकित्सक देवघर के है जबकि एक चिकित्सक धनबाद एवं एक जमुई जिले से आ कर अपनी सेवा देंगे।आज उदघाटन के दिन डॉ शिवांगी न्यूरोलॉजी का ओ पी डी था उन्होंने आज पांच मरीजों का इलाज किया।सदर अस्पताल के सामान्य ओ पी डी से मरीजों को संबंधित विशेषज्ञ के लिए रेफर करेंगे फिर उस मरीज को उपाधीक्षक द्वारा देख कर की किस विशेषज्ञ ,अति विशेषज्ञ चिकित्सक से उनकी इलाज की जरूरत है उनके पास इलाज के लिए भेजा जाएगा।आयुष्मान भारत योजना के जिला नोडल पदाधिकारी डॉ शरद कुमार द्वारा आज से शुरू किए गए ओ पी डी में मरीजों और चिकित्सकों के बीच सामंजस्य बैठाते हुए बेहतर इलाज एवं चिकित्सकों की सुविधा से संबंधित सभी पहलू पर नजर रखी जा रही थी।सिविल सर्जन ने कहा कि संथाल परगना प्रमंडल में देवघर पहला जिला है जहां आज से ऐसी व्यवस्था लागू की गई है।उन्होंने कहा कि उनका प्रयास होगा कि बेहतर इलाज एवं विभागीय आदेश को बेहतर तरीके से जन जन तक पहुंचाया जा सके।डॉ प्रभात रंजन ने कहा कि यह एक अनूठा प्रयास है जिसको फलीभूत करना हमारी जिम्मेदारी है।डॉ शरद कुमार ने कहा कि आयुष्मान लाभुक मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी,आयुष्मान लाभुक मरीज जो भर्ती होंगे उन्हें सभी चिकित्सीय सुविधा मुफ्त दी जाएगी और उनके इलाज से जो राशि बीमा कंपनी द्वारा अस्पताल को प्राप्त होगी उस राशि से विशेषज्ञ चिकित्सकों को उनकी राशि दी जाएगी।

### भूरकुंडा गांव में पूर्व पैक्स अध्यक्ष के घर पर असामाजिक तत्वों का हमला

**पथराव में दो घायल, गांव में तनाव का माहौल**

**रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह**

गोह (औरंगाबाद)गोह थाना क्षेत्र के भूरकुंडा गांव में बुधवार की पूर्वाह्न करीब 10 बजे उस समय सनसनी फैल गई जब दर्जनों की संख्या में असामाजिक तत्वों ने पूर्व पैक्स अध्यक्ष बिनय कुमार सिंह के घर पर अचानक हमला कर दिया। हमलावर लाठी-डंडे से लैस थे और उन्होंने घर पर करीब एक घंटे तक जमकर पथराव किया। इस हिंसक घटना में पूर्व पैक्स अध्यक्ष के चचेरे भाई अनिल सिंह और गांव के ही राजेश वर्मा के पुत्र नीरज कुमार घायल हो गए। ग्रामीणों ने घायलों को तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, गोह पहुंचाया, जहां प्राथमिक इलाज के बाद चिकित्सकों ने अनिल सिंह की गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए गया रेफर कर दिया। वहीं नीरज कुमार का इलाज स्थानीय स्तर पर जारी है। पूर्व अध्यक्ष बिनय कुमार सिंह ने पुलिस को दिए अपने बयान में बताया कि हमलावारो के द्वारा रंगदारी मागने का आरोप लगाया गया है इसी रंजिश को लेकर गांव के 20 से 25 लोगों, जो सभी पासवान जाति से बताए जा रहे हैं, ने बुधवार को उनके घर पर हमला कर दिया। पथराव के दौरान घर की खिड़कियां, दरवाजे, छत की चादरें और घर के बाहर खड़ी चार पहिया वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। वहीं, सिवाला मोड़ के समीप खड़ी बुचानू सिंह उर्फ अमरेंद्र कुमार सिंह की पिकअप वैन पर भी पत्थरबाजी की गई, जिससे उसका शीशा टूट गया और वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। घटना की सूचना मिलते ही गोह थानाध्यक्ष मो. इमरान दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस की गाड़ी देखकर हमलावर मौके से फरार हो गए। थानाध्यक्ष ने बताया कि घर में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज जब्त कर ली गई है और उसकी जांच की जा रही है। उन्होंने कहा कि पीड़ित पक्ष के बयान के आधार पर नामजद एफआईआर दर्ज की जा रही है और आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की जाएगी। घटना के बाद गांव में तनाव का माहौल व्याप्त है। किसी अप्रिय घटना की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए पुलिस की तैनाती की गई है और गांव में लगातार गश्ती की जा रही है। इस घटना को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है और लोग दोषियों की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। पूर्व पैक्स अध्यक्ष बिनय कुमार सिंह ने प्रशासन से मांग की है कि हमलावरों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई हो ताकि भविष्य में कोई इस तरह का दुस्साहस न कर सके।

# नई दिल्ली-भागलपुर एवं अमृतसर-सहरसा के मध्य स्पेशल ट्रेन का परिचालन

## साथ ही मुजफ्फरपुर और आनंद विहार के मध्य चलायी जा रही

**03 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के परिवालन अवधि में विस्तार**

**हाजीपुरः** ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर रेलवे द्वारा कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी कड़ी में और 02 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है जिनका विवरण निम्नानुसार है - 1. गाड़ी संख्या 04068/04067 नई दिल्ली-भागलपुर-नई दिल्ली स्पेशल (डीडीयू-पटना- किउल-जमालपुर के रास्ते): गाड़ी संख्या 04068 नई दिल्ली-भागलपुर स्पेशल 11 मई से 09 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक रविवार एवं बुधवार को नई दिल्ली से 14.00 बजे खुलकर अगले दिन 02.50 बजे डीडीयू, 07.30 बजे पटना एवं 10.40 बजे किउल सहित अन्य स्टेशनों पर रूकते हुए 13.30 भागलपुर पहुंचेगी । वापसी में, गाड़ी संख्या 04067 भागलपुर-नई दिल्ली स्पेशल 12 मई से 10 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक सोमवार एवं गुरूवार को भागलपुर से 14.30 बजे खुलकर 17.25 बजे किउल, 20.45 बजे पटना एवं अगले दिन 01.10 बजे डीडीयू सहित अन्य स्टेशनों पर रूकते हुए 14.30 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी । 2. गाड़ी संख्या 04618/04617 अमृतसर-सहरसा-अमृतसर स्पेशल (बरौनी-हाजीपुर-छपरा-गोरखपुर-मुरादाबाद-यमुनानगर जगाधरी के रास्ते) : गाड़ी संख्या 04618 अमृतसर-सहरसा स्पेशल 12 मई से 08 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार को अमृतसर से 20.10 बजे खुलकर अगले दिन 22.15 बजे हाजीपुर, 23.45 बजे बरौनी सहित विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए तीसरे दिन 02.30 बजे सहरसा पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 04617 सहरसा-अमृतसर स्पेशल 14 मई से 10 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक बुधवार एवं गरूवार को सहरसा से 04.40 बजे खुलकर 08.00 बजे बरौनी, 10.10 बजे हाजीपुर सहित विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए अगले दिन 14.00 बजे अमृतसर पहुंचेगी । इसके साथ यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर आनंद विहार और मुजफ्फरपुर के मध्य चलने वाली 03 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन अवधि में विस्तार निम्नानुसार किया जा रहा है - 1. गाड़ी सं. 05283 मुजफ्फरपुर-आनंद विहार क्लोन स्पेशल - इसका परिचालन विस्तार करते हुए इसे अब 16 मई से 27 जून, 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को चलायी जाएगी । 2. गाड़ी सं. 05284 आनंद विहार-मुजफ्फरपुर क्लोन स्पेशल - इसका परिचालन विस्तार करते हुए इसे अब 17 मई से 28 जून, 2025 तक प्रत्येक शनिवार को चलायी जाएगी । 3. गाड़ी सं. 04030 आनंद विहार-मुजफ्फरपुर स्पेशल - वर्तमान में इस स्पेशल का परिचालन 17 मई, 2025 तक प्रत्येक मंगलवार एवं शनिवार को की जा रही है । इसका परिचालन विस्तार करते हुए इसे अब 20 मई से 08 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक मंगलवार एवं शनिवार को चलायी जाएगी ।4. गाड़ी सं. 04029 मुजफ्फरपुर-आनंद विहार स्पेशल - वर्तमान में इस स्पेशल का परिचालन 18 मई, 2025 तक प्रत्येक बुधवार एवं रविवार को की जा रही है । इस-का परिचालन विस्तार करते हुए इसे अब 21 मई से 09 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक बुधवार एवं रविवार को चलायी जाएगी । 5. गाड़ी सं. 04018 आनंद विहार-मुजफ्फरपुर स्पेशल - वर्तमान में इस स्पेशल का परिचालन 29 मई, 2025 तक प्रत्येक गुरूवार को की जा रही है । इसका परिचालन विस्तार करते हुए इसे अब 05 जून से 10 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक गुरूवार चलायी जाएगी ।6. गाड़ी सं. 04017 मुजफ्फरपुर-आनंद विहार स्पेशल - वर्तमान में इस स्पेशल का परिचालन 30 मई, 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को की जा रही है । इसका परिचालन विस्तार करते हुए इसे अब 06 जून से 11 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार चलायी जाएगी ।

# शहीद का पार्थिव शरीर पहुंचा गांव, उमरा जनसैलाब, पत्नी ने बच्चों के साथ नम आंखों से दी अंतिम विदाई

## शव को चूमती रही पत्नी, नजारा देख हर आंख हुई नम

**शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पहुंचे मंत्री श्रवण कुमार**

**रंजीत विद्यार्थी**

बेगूसराय (मुंगेर) : जम्मू कश्मीर में सड़क दुर्घटना में बेगूस-राय के अमरपुर के जेसीओ सुजीत कुमार का निधन हो गया। मंगलवार को उनका पार्थिव शरीर गांव पहुंचा, जहां हजारों लोग श्रद्धांजलि देने उमड़ पड़े। पत्नी सिंधु देवी ने बच्चों के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी। मंत्री श्रवण कुमार ने बिहार सरकार की ओर से 21 लाख रुपये की सहायता की घोषणा की। बताते चले की जम्मू-कश्मीर में एक सड़क हादसे में ऑन ड्यूटी वीरगति को प्राप्त हुए बेगूसराय जिले के अमरपुर निवासी जेसीओ सुजीत कुमार का पार्थिव शरीर मंगलवार को उनके पैतृक गांव लाया गया। जैसे ही सेना के जवान उनका शव लेकर गांव पहुंचे, हजारों की भीड़ श्रद्धांजलि देने उमड़ पड़ी। पूरा इलाका 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम' के नारों से गूंज उठा। शहीद सुजीत की पत्नी सिंधु देवी, बेटियां संध्या और सोनम, और बेटा किंसू ने पुष्प अर्पित कर उन्हें अंतिम सलामी दी।

इस दौरान पत्नी सिंधु देवी अपने पति के पार्थिव शरीर को बार-बार चूमती रहीं। यह भावुक दृश्य देख वहां मौजूद हर आंख नम हो गई।

**पत्नी ने की प्रधानमंत्री मोदी से मांग**

शहीद की पत्नी ने बताया कि घटना के दिन सुबह ही पति से बातचीत हुई थी। उन्होंने परिवार की कुशलक्षेम पूछी थी, लेकिन मूवमेंट की कोई जानकारी नहीं दी थी। सिंधु देवी ने प्रधानमंत्री मोदी और राज्य की नीतीश सरकार से निवेदन किया कि उनके बच्चों की पढ़ाई और भविष्य के लिए सहयोग किया जाए और शहीद के नाम पर सड़क का नाम रखा जाए।

**बेटी संध्या ने लिया संकल्प**

शहीद की बेटी संध्या ने कहा, 'पापा चाहते थे कि हम आर्मी अफसर बनें, हम उनके सपने को पूरा करेंगे। हमें उनके सर्वोच्च बलिदान पर गर्व है।' उन्होंने यह भी बताया कि अंतिम बार 03 मई की रात पापा से बात हुई थी, और वे हमेशा एनडीए की तैयारी और सेना के जीवन की बातें साझा करते थे। जम्मू कश्मीर में सड़क दुर्घटना में हजारों लोग श्रद्धांजलि देने उमड़े। पत्नी सिंधु देवी ने बच्चों के साथ दी अंतिम विदाई। शव को बार-बार चूमती रही पत्नी

**ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार हुए शामिल, दिया ये आश्वासन**

बिहार सरकार की ओर से ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित की और ऐलान किया कि परिजनों को 21 लाख रुपये की राहत राशि दी जाएगी। साथ ही, उनके सम्मान में विशेष कदम उठाने के निर्देश जिला प्रशासन को दिए गए हैं। डीडीसी सोमेश बहादुर माथुर, डीएसपी इमरान अहमद, जदयू जिलाध्यक्ष रुदल राय सहित कई गणमान्य लोगों ने पुष्पांजलि अर्पित की।

**शहीद के स्वागत में उमड़ा जनसैलाब**

शव यात्रा सिमरिया गंगा तट से शुरू होकर चकिया, बीहट, जीरो माइल, गढ़हारा, जयनगर होते हुए अमरपुर पहुंची। रास्ते भर लोग दोपहर से ही सड़क किनारे खड़े होकर अपने लाल की एक झलक पाने को व्याकुल दिखे। अमरपुर मध्य विद्यालय परिसर में जब उनका पार्थिव श-रीर पहुंचा, तो 10 हजार से अधिक लोग श्रद्धांजलि देने के लिए मौजूद थे।

# रेल इतिहास में पहली दफा शेखपुरा से खुली ट्रेन, नवादा-गया होकर जाएगी दिल्ली

**शेखपुरा जंक्शन से नई दिल्ली तक की रेल सेवा शुरू की गई है.**

**जमुई सांसद अरुण भारती ने हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को रवाना किया.**

**रंजीत विद्यार्थी**

शेखपुरा (मुंगेर) :भारतीय रेलवे ने बड़ा निर्णय लेते हुए शेखपुरा वासियों के लिए बड़ा सौगात दे दी है. किऊल-गया रेलखंड के शेखपुरा स्टेशन से दिल्ली के लिए सीधीट्रेन रवाना हुई. शेखपुरा के लोगों के बीच काफी उत्साह देखा जा रहा है. कहा जा रहा है कि देश में आजादी के बाद पहली बार यह निर्णय लिया गया है.

**शेखपुरा से ट्रेन दिल्ली रवाना**

शेखपुरा रेलवे स्टेशन पर मंगलवार की सुबह से ही नेताओं का तो जमघट लगा रहा. लोजपा आर के सांसद अरुण भारती ने हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को शेखपुरा रेलवे स्टेशन से दिल्ली के लिए रवाना किया. इस मौके पर दानापुर रेल मंडल के सहायक वाणिज्य प्रबंधक प्रशांत कुमार और आरपीएफ के सहायक कमांडर जेएन राम भी मौजूद थे.-

**जमुई सांसद ने ट्रेन को झंडी दिखाकर किया रवाना**

शेखपुरा से नई दिल्ली के लिए पहली बार सीधी रेल सेवा शुरू हुई है. शेखपुरा के लोगों की काफी दिनों से मांग थी. भारतीय रेलवे ने गर्मियों के लिए यह विशेष सुपरफास्ट ट्रेन चलाई है जो सप्ताह में दो दिन मंगलवार और शुक्रवार को रवाना होगी.- अरुण भारती, सांसद, जमुई

**पहले ही दिन सात घंटा विलंब से खुली ट्रेन**

पहले ही दिन शेखपुरा से नई दिल्ली जाने वाली समर स्पेशल ट्रेन सात घंटा 32 मिनट विलंब से पहुंची और छह घंटा 39 मिनट विलंब से खुली. यात्री ब्रजकिशोर सिंह ने बताया कि उनका पटना जंक्शन से महाबोधि एक्सप्रेस में टिकट था जब उन्हें जानकारी मिला की शेखपुरा से सीधे दिल्ली तक ट्रेन खुल रही है. उन्होंने टिकट को कैंसिल कर इस ट्रेन में सफर करने को मन बनाएं. लेट पहुंचने से वे बेहद ही ना-राज दिखे.,

**हमसफर, बंदे भारत का हो ठहरावः**

इस मौके पर स्थानीय विधायक विजय कुमार ने हमसफर, बंदे भारत और पुणे एक्सप्रेस ट्रेन के ठहराव को लेकर ने कहा कि इन मांगों को लेकर हमने पत्राचार किया है. वहीं राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि सह भाजपा नेता विपिन मंडल ने कहा कि राज्यसभा सांसद शंभू शरण पटेल के द्वारा संसद भवन में तो रेलवे बोर्ड की बैठक में इन मांगों को उठाया जाता रहा है

**नवादा-गया होकर जाएगी दिल्ली**

बता दें कि यह सुपरफास्ट समर स्पेशल ट्रेन नवादा और गया होते हुए दिल्ली पहुंचेगी. इस ट्रेन का संचालन पहले सिर्फ गया से नई दिल्ली के बीच होता था, लेकिन यात्रियों की ओर से ही मांग की गई थी. उन्हीं की मांग को देखते हुए अब इसे शेखपुरा तक के लिए विस्तार कर दिया गया है.

**ट्रेन की टाइमिंग**

गाड़ी संख्या 04063 शेखपुरा-नई दिल्ली समर स्पेशल सुपरफास्ट ट्रेन 10 जुलाई 2025 तक हर मंगलवार और शुक्रवार को सुबह 7 बजे शेखपुरा से प्रस्थान करेगी. यह अगले दिन सुबह 3:15 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी. दूसरी ओर, वापसी में गाड़ी संख्या 04064 नई दिल्ली-शेखपुरा ट्रेन 5 मई से 10 जुलाई 2025 तक हर सोमवार और गुरुवार को सुबह 9:30 बजे दिल्ली से प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 05 बजे शेखपुरा पहुंचेगी.

# महिला संवाद के माध्यम से लोगों को किया जागरूक

## महिलाओं ने स्वरोजगार की उठाई मांग

**मुंगेर।** मुंगेर जिला अंतर्गत विभिन्न प्रखंडों में महिला संवाद के माध्यम से आम महिलाओं को सशक्त बनाने तथा स्वरोजगार के प्रति जागरूक बनाने की दिशा में अलग-अलग कार्यक्रम चलाए गए। हवेली खड़गपुर प्रखंड के नाकी पंचायत के लक्ष्मीपुर जागीर पंचायत भवन में आकाश जीविका महिला ग्राम संगठन क्षेत्र में महिला संवाद का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रखंड परियोजना प्रबंधक अंजु कुमारी ने की कार्यक्रम ने जिला से उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह, जिला परियोजना प्रबंधक गुरुदेव शामिल हुए। संवाद कार्यक्रम में महिलाओं के सशक्तिकरण, जागरूकता एवं बिहार सरकार द्वारा सरकारी योजनाओं की जानकारी को लेकर संवाद रथ में दिखाए जा रहे डॉक्यूमेंट्री फिल्म के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। कार्यक्रम में ग्राम संगठन से जुड़े हुए जीविका दीदियों,स्थानीय महिलाओं एवं पुरुषों की सक्रिय भागीदारी रही। जीविका दीदी सुनीता देवी ने बताया कि जीविका में जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी वो जीविका से ऋण लेकर अपने रोजगार को बढ़ाया। उधर, बरियारपुर प्रखंड के नीरपुर पंचायत के आशा टोला दुर्गा स्थान के प्रांगण में गीतांजलि जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा महिला संवाद कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में संवाद रथ के माध्यम से सरकार द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार की योजनाओं से अवगत कराया गया। जैसे कन्या उत्थान योजना, पोशाक योजना, पेंशन योजना, नल जल योजना इत्यादि। इस दौरान जीविका दीदी के द्वारा अपने और अपने पि-रवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए सरकार से कुछ मांगो को रखा गया। जिसमें पेंशन राशि में वृद्धि, इंदिरा आवास, शौचालय निर्माण निधि का पुनः सर्वे करने की मांग की गई। साथ ही ग्राम संगठन की सुधा रेणु दीदी के द्वारा पंचायत के हर वार्ड और नीरपुर दुर्गा स्थान में सामुदायिक शौचालय की मांग की गई है। प्रखंड स्तर पर पशु अस्पताल, हर प्रखंड के स्वास्थ्य केन्द्र में आईसीयू की व्यवस्था, प्रखण्ड स्तर पर डिग्री कॉलेज और

आईटीआई संस्थान खोलने की मांग उठाई। धरहरा प्रखंड के शिवकुंड पंचायत में सुगंध जीविका महिला ग्राम संगठन के क्षेत्र में महिला संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इस कार्य क्षेत्र की आकांक्षाओं एवं मुद्दा को दीदी के द्वारा उठाया गया जिसमें सरिता दीदी के द्वारा विधवा, वृद्धा और विकलांग पेंशन की राशि बढ़ाने की मांग की गई। साथ ही इंटरमीडिएट की छात्रों के लिए लैपटॉप, महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त होने के लिए प्रत्येक महीना 3000 रुपए सहायता राशि सीधे बैंक खाते में देने, छर्रापट्टी गांव में एक 10 बेड का अस्पताल, जिसमें 24 घंटा दवाई, चिकित्सक और नर्स की सुविधा उपलब्ध हो, की मांग उठाई गई। असरगंज प्रखंड अंतर्गत अमैया पंचायत के नार-ीशक्ति एवं भाग्य जीविका महिला ग्राम संगठन में महिला संवाद कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिस-का संचालन सामुदायिक समन्वयक अनुपम कुमार, एवं जीविकोपार्जन विशेषज्ञ विमल सिंह की उपस्थिति में किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम में दीदियों को मुख्यमंत्री का संदेश पत्र पढ़ कर सुनाया गया। इसके बाद वैन में लगे एलईडी के माध्यम से सरकार द्वारा महिलाओ एवं लड़कियों हेतु चलाए जा रहे महत्वाकांक्षी योजनाओं जैसे महिला आरक्षण, मुख्यमंत्री बालिका पोशाक एवं साइकिल योजना, मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना, स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना, मुख्यमंत्री किशोरी स्वास्थ्य योजना, जीविका अंतर्गत सतत जीविकोपार्जन योजना, दीदी का अधिकार केंद्र, दीदी की रसोई, सिलाई सेंटर, कस्टम हायरिंग सेंटर आदि योजना के बारे में दिखाया गया। इसके बाद नारीशक्ति ग्राम संगठन अंतर्गत चंद्र प्रभा देवी बैजलपुर का चयन बी पी एस सी द्वारा शिक्षक भर्ती में होने, अनीता देवी को स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना, इंदु देवी को प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना का लाभ, अनीता देवी को शौचालय, प्रतिमा कुमारी को आवास, मीना देवी को सतत जी-विकोपार्जन योजना, अनीता देवी को साइकिल योजना का लाभ मिलने एवं भाग्य जीविका महिला ग्राम संगठन, मंगरप्पा की सुनैना को प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना, फूलन देवी एवं नीलम देवी को सतत जीविकोपार्जन योजना, किरण, शमीर्ला, अंजू, बसंती को शौचालय, अंजनी को स्टूडेंट क्रे-डिट कार्ड योजना का लाभ मिलने की जानकारी सभी महिलाओं को दिया गया। इसके बाद उपस्थित सभी सदस्यों ने अमैया पंचायत में एक सामुदायिक शौचालय, विवाह भवन बनवाने की मांग की, एवं प्रधान मंत संग्रामपुर प्रखंड के रामपुर पंचायत में प्रेरणा जीविका महिला ग्राम संगठन के कार्यक्षेत्र में महिला संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 235 दीदियों ने भाग लिया। बैठक में क्षेत्रीय समन्वयक राहुल कुमार, सामुदायिक समन्वय विभूति कुमार यादव ने बैठक का संचालन किया। इसके बाद उक्त कार्यक्रम में दीदियों को माननीय मुख्यमंत्री महोदय का संदेश पत्र पढ़ कर सुनाया गया। जीविकोपार्जन योजना का लाभ मिलने पर खुशी व्यक्त की।

## आपूर्ति श्रृंखलाओं पर भारत का दृष्टिकोण दीर्घकालिक : सीतारमण

**मिलान।** केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज यहां कहा कि आपूर्ति श्रृंखलाओं पर भारत का दृष्टकोण अल्पकालिक नहीं रहा है बल्कि दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाया गया है। श्रीमती सीतारमण ने यहां एशियाई विकास बैंक (एडीबी) की 58वीं वार्षिक बैठक में एडीबी गवर्नर्स सेमिनारः भविष्य के लचीलेपन के लिए सीमा पार सहयोग' के दौरान कहा 'हमारा दृष्टिकोण हमारे पास मौजूद परिसंपत्तियों के आधार पर खुद को और अधिक मजबूत करना है, चाहे वह मानव पूंजी के रूप में हो या प्रौद्योगिकी के रूप में जिसमें हम अग्रणी हैं, अगर मैं ऐसा कह सकता हूं, और उन क्षेत्रों में भी जिनमें हमें लगता है कि हम आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत के पास लगभग 60 करोड़ लोग हैं जो 25 वर्ष से कम आयु के हैं। इसलिए भारत ऐसी अर्थव्यवस्था से नहीं जुझ रही हैं जो बूढ़ी हो रही है। उन्होंने कहा 'हमने डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डीपीआई) विकसित की है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वैश्विक बाजार तक पहुंच उस नागरिक को भी मिले जो दूर-दराज के किसी गांव में रहता है और उसके पास कुछ हस्तशिल्प उत्पाद हैं जिन्हें वह बेचना चाहता है।

## एयरटेल अफ्रीका और स्पेसएक्स में करार, सैटेलाइट इंटरनेट से जुड़ेगा दूर-दराज का अफ्रीका

**दुबई।** दूरसंचार सेवा प्रदाता कंपनी एयरटेल अफ्रीका ने अफ्रीकी महाद्वीप में अपने ग्राहकों तक स्पेसएक्स की हाई-स्पीड सैटेलाइट इंटरनेट सेवा स्टारलिंक पहुंचाने के लिए एक रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। कंपनी ने बयान जारी कर बताया कि स्टारलिंक को एयरटेल अफ्रीका के 14 में से 9 देशों में परिचालन की अनुमति मिल चुकी है जबकि बाकी पांच देशों में लाइसेंसिंग प्रक्रिया जारी है। इस साझेदारी से एयरटेल अफ्रीका अपने सैटेलाइट-आधारित कनेक्टिविटी समाधान को और बेहतर बनाकर ग्रामीण इलाकों में कनेक्टिविटी का विस्तार करेगा। साथ ही कंपनी स्टारलिंक की सहायता से सेलुलर बैकहॉलिंग के जरिए नेटवर्क पहुंच को और भी मजबूत बनाने की योजना पर काम कर रही है। एयरटेल अफ्रीका के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील तलदार ने कहा कि यह साझेदारी अफ्रीका की डिजिटल अर्थव्यवस्था को गति देने के उनके निरंतर प्रयासों का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि अगली पीढ़ी की सैटेलाइट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगी कि अफ्रीका के सबसे दूरवर्ती और कम सेवा प्राप्त हिस्सों में भी विश्वसनीय और किफायती वॉयस और डेटा सेवाएं उपलब्ध हो सकें।

## सीतारमण ने की जेबीआईसी के गवर्नर से भेंट

**मिलान।** केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज मिलान में एशियाई विकास बैंक की वार्षिक बैठक के मौके पर जापान बैंक फॉर इंटरनेशनल कोऑपरेशन (जेबीआईसी) के गवर्नर नोबुमित्सु हयाशी से मुलाकात की। वित्त मंत्रालय ने एक्स पर कहा कि इस दौरान वित्त मंत्री ने कहा कि भारत के लिए महत्वाकांक्षी 5 लाख येन का निवेश लक्ष्य का 70 प्रतिशत से अधिक प्राप्त हो चुका है और भारत विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को मजबूत करने की आशा करता है क्योंकि दोनों देश 10 साल के सहयोग पर काम करते हैं। वित्त मंत्री ने जेबीआईसी को विनिर्माण, अर्धचालक, हरित ऊर्जा और बुनियादी ढांचे सहित भारत के उच्च विकास वाले क्षेत्रों में अधिक जापानी निवेश को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। जबकि जापान 43.28 अरब डॉलर के एफडीआई प्रवाह के साथ भारत का 5वां सबसे बड़ा निवेशक बना हुआ है, इस साझेदारी को और विस्तारित करने की क्षमता है।

## पेट्रोल और डीजल की कीमतों में टिकाव

**नई दिल्ली।** अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उबाल आने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज टिकाव रहा, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर आज अमेरिकी क्रूड 2.96 प्रतिशत उबलकर 58.82 डॉलर प्रति बैरल पर और लंदन ब्रेंट क्रूड 2.92 प्रतिशत की छलांग लगाकर 61.99 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

# भारत-यूके के बीच मुक्त व्यापार समझौता, मोदी और स्टारमर ने किया स्वागत

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** भारत और ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर सहमत हो गए हैं। दोनों देशों ने एक व्यापक व्यापार समझौते की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और यूनाइटेड किंगडम (यूके) के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने टेलीफोन पर बातचीत की। दोनों नेताओं ने डबल कॉन्ट्रिब्यूशन कन्वेंशन के साथ-साथ भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते का स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया, ÷अपने मित्र प्रधानमंत्री कीर स्टारमर से बात करके बहुत प्रसन्नता हुई। एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में, भारत और ब्रिटेन ने एक महत्वाकांक्षी और पारस्परिक रूप से लाभकारी मुक्त व्यापार समझौते के साथ-साथ एक दोहरे योगदान सम्मेलन को सफलतापूर्वक संपन्न किया है। ये ऐतिहासिक समझौते हमारी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करेंगे तथा हमारी दोनों अर्थव्यवस्थाओं में व्यापार, निवेश, विकास, रोजगार सृजन और नवाचार

को बढ़ावा देंगे। मैं जल्द ही प्रधानमंत्री स्टारमर का भारत में स्वागत करने के लिए उत्सुक हूं। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने एक बयान जारी कर कहा कि दोनों नेताओं ने इसे द्विपक्षीय व्यापक रणनीतिक साझेदारी में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बताया, जो दोनों अर्थव्यवस्थाओं में व्यापार, निवेश, नवाचार और रोजगार सृजन को बढ़ावा देगा। दोनों इस बात पर सहमत हुए कि दुनिया की दो बड़ी और खुली बाजार अर्थव्यवस्थाओं के बीच ऐतिहासिक समझौते व्यवसायों के लिए नए अवसर खोलेंगे, आर्थिक संबंधों को मजबूत करेंगे और लोगों के बीच संबंधों को गहरा करेंगे।प्रधानमंत्री स्टार्मर ने कहा कि दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं के साथ गठबंधनों को मजबूत करना और व्यापार बाधाओं को कम करना, एक मजबूत और अधिक सुरक्षित अर्थव्यवस्था प्रदान करने के लिए उनकी परिवर्तन योजना का हिस्सा है। पीएमओ के बयान के अनुसार, दोनों नेताओं ने इस बात पर सहमति जताई कि भारत और ब्रिटेन के बीच आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों का विस्तार, लगातार मजबूत होती जा रही और बहुआयामी साझेदारी की आधारशिला है। वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार को शामिल करते हुए एक संतुलित, न्यायसंगत और महत्वाकांक्षी एफटीए से द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि होने, रोजगार के नए अवसर पैदा होने, जीवन स्तर में सुधार होने और दोनों देशों के नागरिकों के समग्र कल्याण में सुधार होने की उम्मीद है। यह दोनों देशों के लिए वैश्विक बाजारों के लिए उत्पादों और सेवाओं को संयुक्त रूप से विकसित करने की नई संभावनाओं को भी खोलेगा।

# बैंक ऑफ बड़ौदा का मुनाफा 3.3 प्रतिशत बढ़ा

**एजेंसी**

**मुंबई।** सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ऑफ बड़ौदा ने वित्त वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही में 5048 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 4886 करोड़ र ुपये की तुलना में 3.3 प्रतिशत अधिक है। बैंक ने शेयर बाजार को बताया कि मार्च 2025 में समाप्त तिमाही में उसकी शुद्ध ब्याज आय 11,019.6 करोड़ रुपये रही जो मार्च 2024 में समाप्त तिमाही के 11793 करोड़ रुपये की तुलना में 6.5 प्रतिशत कम है। बैंक का सकल एनपीए घटकर 2.26 प्रतिशत हो गया, जो पिछली तिमाही में 2.43 प्रतिशत था। इसी तरह से शुद्ध एनपीए भी घटकर 0.58 प्रतिशत पर आ गया जबकि तीसरी तिमाही में यह 0.59 प्रतिशत था।

## सर्राफा बाजार में चमका सोना, चांदी की भी बढ़ी चमक

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** घरेलू सर्राफा बाजार में आज लगातार दूसरे दिन तेजी का रुख नजर आ रहा है। सर्राफा बाजारों में सोना आज 500 रुपये से लेकर 540 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा होकर एक बार फिर एक लाख रुपये के स्तर के काफी करीब पहुंच गया है। कीमत में आई तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 99,000 रुपये से लेकर 99,150 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 90,750 रुपये से लेकर 90,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में भी आज तेजी आई है, जिसके कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 99,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है।दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 99,150 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 90,900 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 99,000 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 99,050 रुपये प्रति 10 ग्राम और

22 कैरेट सोने की कीमत 90,800 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 99,000 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 90,750 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 99,000 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 99,150 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 90,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 99,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 90,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 99,150 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना महंगा हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 99,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 90,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

## पूर्ण चार्ज पर 449 किलोमीटर चलने वाली विंडसोर प्रो ई कार लॉंच

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने नई तकनीक और सुरक्षा सुविधाओं के साथ-साथ नए 52.9 केडब्ल्यूएच बैटरी पैक के साथ नयी विंडसोर इसेंस प्रो ईलेक्ट्रिक कार लॉंच करने की घोषणा की जिसकी एक्स शोरूम कीमत 1749800 रुपये है जो पहली 8000 बुकिंग के लिए वैद्य है और बैटरी को किराये पर लेने अर्थात बैटरी-एज़-ए-सर्विस (बीएएएस) के लिए इसकी शुरूआती बीएएएस कीमत 12.49 लाख रुपये और 4.5 रुपये प्रति किलोमीटर है। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि विंडसोर को लॉंचिंग के बाद ग्राहकों से मिली प्रतिक्रिया के बाद विंडसोर प्रो बिजनेस क्लास यात्रा के अनुभव को बढ़ाएगा। प्रो सीरीज़ के जुड़ने से इसका बाजार प्रदर्शन और मजबूत होगा। कंपनी ने अपने बैटरी-एज़-ए-सर्विस की पहुंच का विस्तार करने के लिए आईडीएफसी फर्स्ट बैंक और कोटक महिंद्रा प्राइम जैसे नए फाइनेंसरों को शामिल किया है। इस स्वामित्व योजना को पहली बार सितंबर 2024 में लॉन्च किया गया था और आज इसे बजाज फिनसर्व, हीरोफिन कॉर्प, इकोफाई, विद्युतटेक, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक और कोटक महिंद्रा प्राइम सहित छह फाइनेंसरों द्वारा समर्थित किया गया है। कंपनी एमजी विंडसर प्रो के पहले मालिक को आजीवन बैटरी वारंटी प्रदान करेगी।

इसके अलावा कंपनी विंडसर प्रो के लिए अपनी 3-60 सुनिश्चित बायबैक योजना पेश करेगी जो यह सुनिश्चित करती है कि यह 3 साल बाद अपने मूल्य का 60 प्रतिशत बरकरार रखेगी। जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया के प्रबंध निदेशक अनुराग मेहरोत्रा ने कहा, एमजी विंडसर भारत के 4 व्हील ईवी सेगमेंट के विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिसने अपने आकर्षक मूल्य प्रस्ताव से ग्राहकों को जीत लिया है। शुरुआती खरीदारों से सकारात्मक प्रचार ने इसे तेजी से स्वीकार्यता प्रदान की, जिससे इसकी पहुंच मेट्रो शहरों से आगे बढ़कर टियर 2 और 3 बाजारों में फैल गई। पारंपरिक से अलग एक उत्पाद पेश करके, हमने सफलतापूर्वक खरीदारों की एक नई लहर को जोड़ा है।

अपने भागीदारों के साथ, हम सही तकनीक के साथ सही समय पर प्रासंगिक नवाचार प्रदान करके भारतीय ऑटो परिदृश्य को फिर से परिभाषित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। एमजी विंडसर प्रो का लॉन्च विस्तारित विकल्प प्रदान करने, सामान्य रूप से ईवी में अधिक आत्मविश्वास पैदा करने और अधिक ग्राहकों को टिकाऊ गतिशीलता के भविष्य में आत्मविश्वास से उद्यम करने के लिए आमंत्रित करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

## अहिल्यानगर में महाराष्ट्र कैबिनेट की विशेष बैठक, 5503.69 करोड़ रुपये की विकास योजनाओं को मंजूरी

**एजेंसी**

**मुंबई।** राजमाता पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर की त्रिशताब्दी जयंती के उपलक्ष्य में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में 5503.69 करोड़ रुपये की विकास योजनाओं को मंजूरी दी गई है। राज्य सरकार ने आज चौंडी (अहिल्यानगर) में राजमाता पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर की त्रिशताब्दी जयंती के उपलक्ष्य में कैबिनेट की विशेष बैठक आयोजित की। इस बैठक में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री अजीत पवार सहित पूरा मंत्रिमंडल उपस्थित था। बैठक में चौंडी में पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर स्मारक स्थल के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए 681.32 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं। अष्टविनायक गणपति मंदिरों के नवीनीकरण के लिए 147.81 करोड़ रुपये, श्री क्षेत्र तुलजाभवानी देवी मंदिर विकास योजना के लिए 1865 करोड़, श्री क्षेत्र ज्योतिबा मंदिर विकास योजना

के लिए 259.59 करोड़ रुपये, श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर विकास योजना के लिए 275 करोड़ रुपये, श्री क्षेत्र महालक्ष्मी मंदिर विकास योजना के लिए 1445.97 करोड़ रुपये, श्री क्षेत्र माहुरगढ़ विकास योजना के लिए 829 करोड़ रुपये कैबिनेट की बैठक में मंजूर किए गए हैं। साथ ही अहिल्यानगर में बालिकाओं और महिलाओं के लिए नई आईटीआई शुरू किए जाने का निर्णय लिया गया है। इसी तरह राहुरी, जिला अहिल्यानगर में वरिष्ठ स्तर का सिविल न्यायालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। कैबिनेट की बैठक में ग्राम सामाजिक परिवर्तन फाउंडेशन (वीएसटीएफ) के अंतर्गत क्रियान्वित किए जा रहे मिशन महाग्राम कार्यक्रम की अवधि को 2022-25 के स्थान पर 2028 तक बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। कैबिनेट की बैठक में धनगर समुदाय के छात्रों को एक प्रसिद्ध अंग्रेजी माध्यम आवासीय विद्यालय में शिक्षा प्रदान करने की योजना का नाम राजा यशवंतराव के नाम पर रखा गया है। यह योजना अब यशवंत विद्यार्थी योजना के रूप में क्रियान्वित की जाएगी। अब तक इस उद्देश्य के लिए 288.92 करोड़ रुपये वितरित किए जा चुके हैं। राजा यशवंतराव होलकर ने 1797 से 1811 के बीच शिक्षा की उन्नति के लिए अनेक कार्य किये। गुरुकुल जैसी परम्परागत शिक्षा को बढ़ावा दिया। सैन्य शिक्षा में अनुशासन, नैतिकता और नेतृत्व गुण शामिल थे। शिक्षा सभी के लिए खुली कर दी गई। महल में लड़कियों के लिए शिक्षा सुविधाएं स्थापित की गईं। अब यह योजना उनके नाम पर रखी गई है। धनगर समाज के पोस्ट-मैट्रिक शिक्षा प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों के लिए राजस्व विभाग मुख्यालय में छात्रावास बनाने की योजना का नाम पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर छात्रावास योजना रखा गया है।

## 22 महीने में 99 प्रतिशत गांवों में पहुंचा 5 जी : सिंधिया

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने आज यहां कहा कि केवल 22 महीनों में 99 प्रतिशत गांवों को 5जी से जोड़ दिया गया और 82 प्रतिशत आबादी को नेटवर्क पर लाया गया है।श्री सिंधिया ने यहां भारत टेलीकॉम 2025 का उद्घाटन करते हुए कहा कि 470,000 टावर लगाए हैं और यह विकास नहीं बल्कि एक दूरसंचार क्रांति है। पूरे भारत में जो डिजिटल हाईवे बनाया गया है, वह केवल संचार के संदर्भ में नहीं है- यह एक ऐसा मजबूत बुनियादी ढांचा है जो 1.4 अरब नागरिकों को स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, शासन और आर्थिक अवसर तक पहुंच प्रदान करके सशक्त बनाता है। उन्होंने प्रगतिशील सुधारों और उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहनों द्वारा समर्थित दूरसंचार निर्यातक और नवाचार के केंद्र के रूप में भारत की बढ़ती भूमिका का उल?लेख किया। उन?होंने कहा कि केवल गांवों को ही नहीं जोड़ रहे हैं अपितु भविष्य को भी जोड़ रहे हैं। जो भी टावर लगाते हैं, जो भी बाइट भेजते हैं, वह 1.4 अरब लोगों को अवसर के करीब लाता है। उन्होंने कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेन?द्र मोदी का साहसिक दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प है जिसने भारत को एक डिजिटल अनुयायी से वैश्विक डिजिटल प्रमुख के रूप में परिवर्तित कर दिया है, आकांक्षाओं को बुनियादी ढांचे में और नीति को प्रगति में बदल दिया है।

# मध्य प्रदेश में दो रुपये प्रति लीटर महंगा हुआ सांची दूध, आज रात 12 बजे से लागू होंगे नए दाम

**एजेंसी**

**भोपाल।** मध्य प्रदेश सहकारी दुग्ध संघ ने उपभोक्ताओं को बढ़ा झटका देते हुए सांची दूध के दाम बढ़ा दिए हैं। एक लीटर दूध के दाम में दो रुपये का इजाफा किया गया है, जबकि आधा लीटर के पैकेट पर एक रुपये की बढ़ोतरी की गई। दुग्ध संघ ने नई रेट लिस्ट जारी कर दी है। नई दरें आज रात 12 बजे से लागू हो जाएंगी।इससे पहले सांची ने पिछले साल जुलाई में अपने उत्पादों के दाम बढ़ाए थे। करीब 10 महीने के बाद फिर से दूध के रेट में बढ़ोतरी की गई है। हालांकि, सांची डीटीएम 160 एमएल टोंड मिल्क एवं परिवार 200 मिमी पैक दूध के रेट में बढ़ोतरी नहीं की गई है। इस संबंध में सांची प्रबंधन का कहना है कि दूध उत्पादन की लागत में बढ़ोतरी और कच्चे

माल की महंगाई के कारण यह फैसला लिया गया है। इस फैसले का सीधा असर आम उपभोक्ताओं की जेब पर पड़ेगा। दुग्ध संघ द्वारा जारी नई दरों के अनुसार, फुल क्रीम गोल्ड (आधा लीटर) पहले 33 का था, जो अब 34 रुपये में मिलेगा, जबकि फुल क्रीम गोल्ड (एक लीटर) की कीमत 65 रुपये से बढ़कर अब 67 रुपये हो गई है। स्टैंडर्ड दूध शक्ति (आधा लीटर) की कीमत 30 की जगह 31 रुपये और टोण्ड दूध ताजा (आधा लीटर) की कीमत 27 रुपये से बढ़कर 28 रुपये हो गई है। वहीं, डबल टोंड दूध स्मार्ट (आधा लीटर) अब 25 रुपये जगह 26 रुपये और चाय दूध (एक लीटर) अब 58 रुपये की जगह 60 रुपये में मिलेगा। गौरतलब है कि भोपाल में पैक्ड दूध में सांची की सबसे ज्यादा खपत होती है। रोज साढ़े तीन लाख लीटर से अधिक दूध की खपत है। अमूल की खपत 70 हजार लीटर है। इसके बाद सौरभ, श्रीधी, मदर डेयरी के दूध भी पैकेट में बिकते हैं। सौरभ और श्रीधी की बात करें, तो इनकी करीब एक लाख लीटर दूध की खपत शहर और भोपाल के ग्रामीण इलाकों में है। मदर डेयरी ब्रांड के दूध की ज्यादातर खपत शहर में ही होती है। भोपाल में पैक्ड दूध की तुलना में खुले दूध की बिक्री ज्यादा होती है। खुले दूध की खपत 8 से 9 लाख लीटर तक प्रतिदिन है।

खुला दूध भी महंगा हुआ है। कई डेयरियों पर प्रति लीटर दो रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है। गौरतलब है कि छह दिन पहले यानी एक मई को अमूल ने दूध के भाव बढ़ाए थे। एक लीटर दूध पर दो रुपए, जबकि आधा लीटर पर एक रुपये की बढ़ोतरी की गई थी। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर-जबलपुर समेत प्रदेश के सभी जिलों में नए रेट लागू हो गए हैं। अब सांची ने भी दूध के दाम बढ़ाकर उपभोक्ताओं को बड़ा झटका दिया है।

## व्यापारी परिसंघ ने किया सेना का समर्थन

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ ने पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान की कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में भारतीय सेना की कार्रवाई का समर्थन किया है। परिसंघ महामंत्री और भारतीय जनता पार्टी के सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा है कि आज देशवासियों के लिए गर्व और खुशी का दिन है। भारतीय सेना ने पाकिस्तान में मौजूद आतंकवादी ठिकानों पर सटीक और सफलतापूर्वक हमला कर उन्हें ध्वस्त कर दिया है। यह कार्रवाई हमारे वीर सैनिकों की असाधारण बहादुरी, साहस और प्रतिबद्धता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि अब आतंकवाद को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यह कार्रवाई केवल एक सैन्य सफलता नहीं, बल्कि नए भारत की निर्णायक और सशक्त सोच का प्रमाण है। श्री खंडेलवाल ने कहा, भारत के नौ करोड़ से अधिक व्यापारियों की ओर से हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं तीनों सेनाओं को सैल्यूट करते हैं ।देश का व्यापारी वर्ग पूर्ण दृढ़ता के साथ प्रधानमंत्री श्री मोदी के हर कदम में उनके साथ है। उन्होंने कहा कि हम तीनों सेनाओं थलसेना, वायुसेना और नौसेना के समन्वित प्रयासों की सराहना करते हैं, जिन्होंने मिलकर यह ऐतिहासिक अभियान सफल बनाया है।

## डिजिटलीकरण के पूर्ण लाभ के लिए डिजिटल अंतर को कम करने की जरूरतः रिपोर्ट

**एजेंसी**

**मिलान, इटली।** एशियाई विकास बैंक (एडीबी) की एक नई रिपोर्ट के अनुसार डिजिटलीकरण एशिया और प्रशांत क्षेत्र में लगातार आर्थिक असमानता को कम करने में मदद करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है लेकिन इसकी क्षमता का दोहन करने के लिए, सरकारों को बुनियादी ढांचे, पहुँच और कौशल में अंतर सहित 'डिजिटल अंतर' को कम करने की आवश्यकता है। हालाँकि विकासशील एशिया और प्रशांत क्षेत्र ने हाल के दशकों में डिजिटल विकास में अन्य क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया है, लेकिन लाभ समान रूप से साझा नहीं किए गए हैं। आज जारी की गई एशियाई विकास नीति रिपोर्ट 2025ः हार्नेसिंग डिजिटल ट्रांसफ़ॉर्मेशन फ़ॉर गुड के अनुसार, पूरे क्षेत्र में इंटरनेट का उपयोग करने वाले निवासियों का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में 13 प्रतिशत अधिक है। शहरी क्षेत्रों में मोबाइल इंटरनेट डाउनलोड की गति भी ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में 38 प्रतिशत अधिक है। पिछले अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि एशिया और प्रशांत क्षेत्र की कई विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ डिजिटल समावेशन के मामले में पिछड़ी हुई हैं और उनमें आम तौर पर डिजिटल कौशल का स्तर कम है।

## पूरे दिन उतार-चढ़ाव के बाद गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार, निवेशकों को लगी 6.85 लाख करोड़ की चपत

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार आज गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत मामूली बढ़त के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद बिकवाली का दबाव बन गया, जिसके कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक गिरकर लाल निशान में पहुंच गए। हालांकि दोपहर 12 बजे के बाद खरीदारों ने लिवाली का जोर बना कर बाजार को सपोर्ट देने की कोशिश भी की। इसके बावजूद शेयर बाजार की स्थिति में अधिक सुधार नहीं हो सका। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.19 प्रतिशत और निफ्टी 0.33 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। आज दिनभर के कारोबार के दौरान रियल्टी, पीएसयू बैंक और एनर्जी सेक्टर के शेयरों में सबसे अधिक बिकवाली होती रही। इसी तरह ऑयल एंड गैस, फार्मास्यूटिकल, कैपिटल गुड्स, एफएमसीजी, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और टेक इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। दूसरी ओर, ऑटोमोबाइल सेक्टर के शेयरों में खरीदारी का जोर बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी आज बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 2.66 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 2.33 प्रतिशत की कमजोरी के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज शेयर बाजार में आई कमजोरी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब सात लाख करोड़ रुपये की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 420.63 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 427.48 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 6.85 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आज दिनभर के कारोबार में बीएसई में 4,072 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 787 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 3,151 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 134 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,580 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 489 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 2,171 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 11 शेयर बढ़त के साथ और 19 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 14 शेयर हरे निशान में और 36 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 110.40 अंक की तेजी के साथ 80,907.24 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के बाद से ही बाजार में मुनाफा वसूली का दबाव बन गया, जिसके कारण इस सूचकांक की चाल में गिरावट आ गई। चौतरफा बिकवाली के कारण यह सूचकांक 315.81 अंक टूट कर 80,481.03 अंक के स्तर तक गिर गया। हालांकि दिन के दूसरे सत्र में खरीदारों ने लिवाली का जोर बनाने की कोशिश की, जिससे इस सूचकांक की स्थिति में मामूली सुधार होता हुआ नजर आया। इसके बावजूद पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 155.77 अंक की कमजोरी के साथ 80,641.07 अंक के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 39.60 अंक की बढ़त के साथ 24,500.75 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के बाद बिकवाली का दबाव बन जाने की वजह से पहले सत्र के कारोबार में ही यह सूचकांक 129.35 अंक लुढ़क कर 24,331.80 अंक तक गिर गया। दिन के दूसरे सत्र में खरीदारों ने लिवाली करके बाजार को सपोर्ट देने की कोशिश भी की, लेकिन बिकवाली का दबाव इतना अधिक था कि यह सूचकांक लगातार लाल निशान में ही कारोबार करता रहा ।

## मेट गाला की रात से पहले ही

# प्रियंका चोपड़ा

## ने खींचा सबका ध्यान, स्किनफिट ड्रेस में निक की बीवी ने फ्लॉन्ट किया किलर फिगर

फैशन शो मेट गाला की बात जब भी होती है तो देसी गर्ल प्रियंका चोपड़ा जोनस का नाम सबसे पहले जुबान पर आता है। इस बार 5 मई से मेट गाला 2025 का आगाज होगा। ऐसे में फैशन के सबसे बड़े इवेंट के लिए मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट अपना रेड कार्पेट बिछाएगा।फैशन शो मेट गाला की बात जब भी होती है तो देसी गर्ल प्रियंका चोपड़ा जोनस का नाम सबसे पहले जुबान पर आता है। इस बार 5 मई से मेट गाला 2025 का आगाज होगा। ऐसे में फैशन के सबसे बड़े इवेंट के लिए मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट अपना रेड कार्पेट बिछाएगा।

तभी तो इस साल मेट गाला की रात से पहले ही उन्होंने अपने अंदाज से सबका दिल जीत लिया है। दरअसल, प्रियंका ने प्री-मेट इवेंट में शिरकत की थी। इस दौरान की तस्वीरें इस समय इंटरनेट पर छाई हैं। लुक की बात करें तो प्रियंका ब्लैक फिटिंग ड्रेस में कहर ढा रही थी। प्रियंका ने अपने लुक को गोल्डन हूप ईयररिंग्स और अंगूठियों के एक स्टाइलिश सेट के साथ कंप्लीट किया जो उनके अंदाज़ में एक बोल्ड टच जोड़ रहा था।उन्होंने ब्लैक स्ट्रैपी हील्स पहनीं जो पूरे आउटफिट को एक मिनिमलिस्टिक लुक दे रही थी।

उनका ब्यूटी लुक भी उतना ही परफेक्ट था। मेकअप फ्रेश लेकिन प्रभावशाली था न्यूड टोन आईशैडो, हल्का स्मज्ड आईलाइनर और घनी पलकें उनके लुक को निखार रही थीं। उनकी भौहें खूबसूरती से गालों पर बल्श के साथ हल्का कॉन्टूर और ग्लो था। एक सॉफ्ट पिंक लिपस्टिक ने पूरे लुक को परफेक्ट बना दिया। इवेंट के लिए प्रियंका ने ओपन हेयर स्टाइल चुना। फैंस प्रियंका की इन तस्वीरों को काफी पसंद कर रहे हैं।

## गैंगस्टा वाइब में शाहरुख खान का धमाकेदार डेब्यू, प्रेग्नेंट कियारा ने फ्लॉन्ट किया 'बेबी बंप', छा गए दिलजीत दोसांझ

मेट गाला 2025 का आयोजन हो चुका है. 'फैशन का ऑस्कर' कहे जाने वाला मेट गाला इस बार बॉलीवुड के लिए भी काफी खास रहा. जहां बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान ने धमाकेदार अंदाज में डेब्यू किया. तो वहीं दूसरी ओर प्रेग्नेंट कियारा आडवाणी ने भी 'बेबी बंप' फ्लॉन्ट किया है. हालांकि, सबसे हटकर अंदाज में दिखाई दिए पंजाबी सिंगर दिलजीत दोसांझ, जिन्होंने एकदम महाराजा वाले लुक में लाइमलाइट चुरा ली. शुरुआत शाहरुख खान से कर रहते हैं, साथ ही सभी स्टार्स की ड्रेस डिटेलिंग पर भी बात करेंगे.दरअसल न्यूयॉर्क के मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट में मई के पहले हफ्ते में हर साल मेट गाला का आयोजन होता है. इस साल इसका आयोजन 5 मई को हुआ था. जो भारत के समय अनुसार मंगलवार यानी 6 मई को सुबह साढ़े 3 बजे से देखा जा सका.

**शाहरुख खान का धमाकेदार डेब्यू**

बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान का मेट गाला 2025 में धमाकेदार डेब्यू हुआ. जहां वो एकदम गैंगस्टा वाइब में दिखाई दिए. डिजाइनर सब्यासाची के आउटफिट में शाहरुख खान काफी जच रहे थे. किंग खान की तस्वीरों पर खुद आलिया भट्ट ने भी 'लीजेंड' लिखते हुए कमेंट किया है. इन तस्वीरों में शाहरुख खान एकदम बैडी लुक में छा गए.

ब्लैक आउटफिट और गले में च नाम का पैंडेंट पहना हुआ है. जिसे लोग देखकर बोले- किंग वाली ही बात है सच में. प्लीटेन साटन कमरबंद, क्रेप टी साइन सिल्क शर्ट और सुपरफाइन ट्राउजर कैरी किया है. साथ ही उन्होंने हाथों में कई सारी रिंग्स पहनी हैं, जो काफी कूल लुक दे रही हैं.

**प्रेग्नेंट कियारा ने पहली बार दिखाया बेबी बंप**

बॉलीवुड एक्ट्रेस कियारा आडवाणी मां बनने वाली हैं. हाल ही में उन्होंने प्रेग्नेंसी अनाउंस की थी. इसी बीच मेट गाला 2025 में पहली बार बेबी बंप फ्लॉन्ट करते हुए नजर आईं. उनकी ड्रेस ने हर किसी का ध्यान खींच लिया. उन्होंने अपने मेट गाला डेब्यू में टेलर्ड फॉर यू' थीम पर बेस्ड कॉस्ट्यूम पहना था. ब्लैक ऑफ शोल्डर गाउन को गोल्डन ब्रालेट के साथ पेयर किया था. हालांकि, ब्रालेट के साथ एक छोटा सा हार्ट भी था, जो चेन से कनेक्टेड था. यह उनके बेबी के लिए स्पेशल साइन था. लोग तारीफ कर रहे हैं. वो पति सिद्धार्थ के साथ इस खास मौके के लिए यहां पहुंची हैं.

## जब पवनदीप राजन ने स्वीकारा मनोज मुंतशिर का चैलेंज, मंच पर सबके सामने जो किया, हर कोई रह गया था दंग

अपनी आवाज से लाखों दिलों पर राज करने वाले पवनदीप राजन अस्पताल में भर्ती हैं. 5 मई को उनकी कार का एक्सीडेंट हो गया, जिसके बाद से नोएडा में उनका इलाज चल रहा है. उन्होंने पिछले कुछ सालों में लोगों के दिलों में बेहद ही खास जगह बनाई है. वो सिंगिंग रिएलिटी शो 'इंडियन आइडल 12' के जरिए लोगों की नजरों में आए थे. उन्होंने इस शो का खिताब तो अपने नाम किया ही था, साथ ही कई ऐसे कारनामे भी कर दिखाए थे, जिसे देखकर हर कोई दंग रह गया था.'इंडियन आइडल 12' में एक दफा मनोज मुंतशिर के सामने पवनदीप ने उनका ही लिखा गाना 'तेरी मिट्टी' गाया था. पवन की आवाज सुनकर मनोज ने उनकी काफी तारीफ की थी, साथ ही उन्होंने पवन को एक चैलेंज भी दिया था और कहा था कि अगर वो इस चैलेंज को पूरा कर लेते हैं तो वो उन्हें टी-सीरीज के मालिक भूषण कुमार से मिलवाएंगे. चैलेंज एक संगीत कंपोज करने का था.

**मनोज मुंतशिर ने क्या कहा था ?**

मनोज मुंतशिर ने कहा था, मैं आपको टेस्ट करना चाहता हूं. और ये टेस्ट सिर्फ एक टेस्ट नहीं है. मैं इंडियन आइडल के स्टेज से नेशनल टेलीविजन पर एक वादा करता हूं कि अगर आप इस टेस्ट में पास हुए, तो मैं टी-सीरीज के मालिक भूषण कुमार जी के पास ले जाकर, उनके सामने आपको बिठाऊंगा और एक धुन जो आप अभी बनाने वाले, वो आप डायरेक्टली उनको सुनाएंगे.

चैलेंज में मनोज के साथ उनके को-कंटेस्टेंट आशीष कुलकर्णी भी थे. चैलेंज को मुश्किल बनाते हुए मनोज मुंतशिर ने दोनों को ज्यादा समय नहीं दिया था. उन्होंने तुरंत ही लिरिक्स दे दिए थे और कहा था कि आपके पास ज्यादा समय नहीं है, कुछ ही पल में आपको कंपोजिशन तैयार करना है. इस चैलेंज को स्वीकार करते हुए पवनदीप और आशीष ने कंपोजिशन तैयार भी कर दिया था.

**तारीफ में अनु मलिक ने क्या कहा था ?**

उस गाने के लिरिक्स कुछ इस तरह थे, ज्यादा कुछ सोचा नहीं कह दिया था तो कह दिया. हमने तुमको जिंदगी कह दिया तो कह दिया. पवनदीप और आशीष ने मिलकर ऐसा कंपोजिशन तैयार किया था और अपनी आवाज से ऐसा गाना गया था कि हर कोई हैरान रह गया था कि दोनों ने इतने कम समय में कैसे कंपोज कर दिया. धुन सुनने के बाद मनोज ने मजाकिया अंदाज में कहा था, पवन-आशीष मेरे पास 10-12 मुखड़े और हैं, प्लीज कंपोज कर दो यार.

शो के जज अनु मलिक ने भी दोनों की तारीफ की थी और कहा था, मैंने अच्छे की उम्मीद की थी, लेकिन मैं ईमादारी से कहना चाहता हूं कि मैंने इतने अच्छे की उम्मीद नहीं की थी. उन्होंने ये भी कहा था, इंडियन आइडल के मंच पर सिंगर्स तो पैदा होते ही हैं, अब संगीतकार भी पैदा हो गया है.

## शाहिद कपूर से शादी के बाद

# मीरा राजपूत

## ने डिलीट किया था फेसबुक अकाउंट, बताया किस बात का था डर

शाहिद कपूर की वाइफ मीरा का बैकग्राउंड फिल्मी नहीं है। हालांकि अब वह बॉलीवुड वाइफ बन चुकी हैं। एक पॉडकास्ट के दौरान मीरा ने बताया कि शादी की शुरुआत में उन्हें किस तरह के चैलेंजेज का सामना करना पड़ा था। मीरा को अचानक लाइमलाइट मिलने लगा। फेसबुक

फ्रेंड रिक्वेस्ट्स से भर गया तो वह डर गई थीं। उन्होंने अपना फेसबुक ही डिलीट कर दिया था।

**फ्रेंड रिक्वेस्ट देख डर गई मीरा**

मीरा राजपूत मोमेंट्स ऑफ साइलेंस पॉडकास्ट में थीं। उन्होंने बताया कि शादी के वक्त वह महज 20 साल की थीं। अचानक इतनी लाइमलाइट मिलने लगी। मीरा ने बताया कि शादी के बाद उन्होंने सबसे पहले क्या किया। वह बताती हैं, मेरे पास अचानक से 3000 फ्रेंड रिक्वेस्ट गईं। उस वक्त 3000 ऐसा लग रहा था कि पूरी दुनिया है। मैं डर गई कि कोई मेरा अकाउंट न हैक कर ले और मेरी तब की फोटोज देख ले जब मैं 15 साल की थी या किसी पार्टी में थी और मेरे कपड़ों से मुझे जज करे।

**दोस्तों की आती थी याद**

मीरा कपूर ने यह भी बताया कि वह दिल्ली की लड़की से बॉलीवुड एक्टर की वाइफ बन गईं। उनके लिए अडजस्ट करना आसान नहीं था। उन्हें शहर बदलना था और एक पब्लिक फिगर की बीवी वाली जिंदगी जीनी थी। मीरा ने बताया कि लोगों को भले ही उनकी जिंदगी परीकथा जैसी लगती हो लेकिन वह अकेली हो गई थीं। उन्हें अपने दोस्तों को देखकर लगता था कि काश वह भी वो सब कर पातीं जो उनके दोस्त कर रहे हैं।